Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ⊙

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 18

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

26 शअबान 1440 हिजरी कमरी 2 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 2 मई 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

क़ुरआन ने जिस क़दर तक़्वा की राहें इख़तियार कीं और हर तरह के इन्सानों और विभिन्न अक़्ल वालों की परवरिश करने के तरीक़े सिखलाए एक अज्ञान ,आलिम और फ़लसफ़ी की परवरिश के रास्ता हर वर्ग के सवालों का जवाब अत: कि कोई फ़िर्क़ा ना छोड़ा जिसके सुधार के तरीक़े ना बताए

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मुत्तक़ी कौन हैं?

ख़ुदा के कलाम से पाया जाता है कि मुत्तक़ी वे होते हैं जो विनय और मिस्कीनी से चलते हैं। वे अंहकार वाली बातचीत नहीं करते। उनकी गुफ़्तगु ऐसी होती है जैसे छोटा बड़े से गुफ़्तगु करे। हम को हर हाल में वह करना चाहिए जिससे हमारी मुक्ति हो। अल्लाह तआला किसी का ठेकेदार नहीं। वह ख़ालिस तक़्वा को चाहता है जो तक़्वा करेगा वह उच्च स्थान को पहुँचेगा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने किसी विरासत से तो इज़्ज़त नहीं पाई। यद्यपि हमारा ईमान है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पिता जी अब्दुल्लाह मुश्रिक ना थे लेकिन उसने नबुव्वत तो नहीं दी। यह तो अल्लाह तआला का फज़्ल था इन सच्चाइयों के कारण जो उनकी फ़ितरत में थे। यही फ़ज़्ल के कारण थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जो अब्बुल अंबिया थे उन्होंने अपने सिदक़ तथा तक़्वा से ही बेटे को क़ुर्बान करने में पीछे ना हटे। ख़ुद आग में डाले गए। हमारे सय्यद मौला हज़रत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही सिदक़ तथा वफ़ादारी देखिए! आप ने हर एक किस्म की बुरी तहरीक का मुक़ाबला किया। तरह-तरह के कष्ट उठाए लेकिन परवाह ना की। यही सिदक़ तथा वफ़ा था जिसके कारण अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल किया। इसीलिए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(सूरह अल्अहज़ाब 57)अल्लाह तआला और इस के सारे फ़रिश्ते रसूल पर दुरूद भेजते हैं। हे ईमान वालो! तुम दुरूद व सलाम भेजो नबी पर।

इस आयत से ज़ाहिर होता है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कर्म ऐसे थे कि अल्लाह ताआला ने उनकी तारीफ़ या गुणों को सीमित करने के लिए कोई विशेष लफ़्ज़ ना फ़रमाया। शब्द तो मिल सकते थे लेकिन ख़ुद प्रयोग ना किए अर्थात आप के नेक कर्म की प्रशंसा सीमा से बाहर थी। इस किस्म की आयत किसी और नबी की शान में प्रयोग ना की। आप की रूह में वह सच्चाई तथा पवित्रता थी और आप के कर्म ख़ुदा की निगाह में इस क़दर पसंद वाले थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह हुक्म दिया कि भविष्य में लोग शुक्रगुज़ारी के तौर पर दुरूद भेजें। उनकी हिम्मत तथा सच्चाई वह थी कि अगर हम ऊपर या नीचे निगाह करें तो इस की तुलना नहीं मिलती। ख़ुद हज़रत मसीह के वक़्त को देख लिया जाए कि उनकी हिम्मत या रुहानी सच्चाई तथा पवित्रता का कहाँ तक असर उनके अनुकरण करने वालो पर हुआ। हर एक समझ सकता है कि एक बुरी आदत वाले को दुरुस्त करना कितना कठिन है। दृढ़ आदत का गँवाना कैसा कठिन कामों में से है लेकिन हमारे मुक़द्दस नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो हज़ारों इन्सानों को दुरुस्त किया जो हैवानों से बुरे थे। कई माताओं और बहनों में हैवानों की तरह फ़र्क़ ना करते थे। यतीमों का माल खाते, मुर्दों का माल खाते। कई सितारा की पूजा करने वाले ,कुछ नास्तिक ,कुछ कणों की पूजा करने वाले थे। अरब के द्वीप में क्या था एक धर्मों का सार अपने अंदर रखता था।

क़ुरआन मजीद पूर्ण हिदायत है।

इस से बड़ा लाभ यह हुआ कि क़ुरआन करीम हर एक किस्म की शिक्षा अपने अंदर रखता है। हर एक ग़लत अक़ीदा या बुरी शिक्षा जो दुनिया में संभव है इस के निवारण के लिए काफ़ी शिक्षा इस में मौजूद है। यह अल्लाह तआला की गहरी हिक्मत तथा सामर्थ्य है।

चूँकि पूर्ण किताब ने आकर पूर्ण सुधार करनी थी। ज़रूर था कि इस के नुज़ूल के वक़्त उस के नुज़ूल के स्थान में बीमारी भी पूर्ण रूप से हो, ताकि हर एक बीमारी का कामिल ईलाज मुहय्या किया जाए। अत: इस द्वीप में पूर्ण रूप से बीमार थे और जिन में वे सारी बीमारियां रुहानी मौजूद थीं जो उस वक़्त या इस से बाद भविष्य की नस्लों को लगने वाली थीं। यही कारण था कि क़ुरआन ने सारी शरीयत की पूर्णता की अन्य किताबों के नाज़िल होने के वक़्त ना यह ज़रूरत थी , ना उनमें ऐसी पूर्ण शिक्षा है।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का महान चमत्कार

हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकतें जितनी प्रकट में आईं अगर समस्त चमत्कारों को अलग कर दिया जाए तो आपका सुधार ही एक महान चमत्कार है। अगर कोई इस हालत पर ग़ौर करे, जब आप आए। फिर उस हालत को देखे ,जो आप छोड़ गए तो इस को मानना पड़ेगा कि यह असर अपने आप में एक चमत्कार था। यद्यपि कल अंबिया इज़्ज़त के योग्य हैं लेकिन ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ (सूरत अल्जुम्अ:5) अगर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न तशरीफ लाते तो नबुव्वत तो एक तरफ रही ख़ुदा तआला की हस्ती का प्रमाण भी इस तरह न मिलता। आप की शिक्षा से पता قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○(सूरह इख़लास 2 से 5) का लगा। अगर तौरेत में कोई ऐसी तालीम होती और क़ुरआन सिर्फ उस की व्याख्या ही करता तो इसाइयों का वजूद ही क्यों होता।

क़ुरान पाक में सब सच्चाईयां हैं

अत: क़ुरआन ने जिस क़दर तक़्वा की राहें इख़तियार कीं और हर तरह के इन्सानों और विभिन्न अक़्ल वालों की परवरिश करने के तरीक़े सिखलाए एक अज्ञान ,आलिम और फ़लसफ़ी की परवरिश के रास्ता हर वर्ग के सवालों का जवाब अत: कि कोई फ़िर्क़ा ना छोड़ा जिसके सुधार के तरीक़े ना बताए। यह एक दक़ीक़ा-ए-वक़्त था। जैसे कि फ़रमाया : فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अल्बय्यन: :4) अर्थात ये वे सहीफ़े हैं जिन में सम्पूर्ण सच्चाईयां हैं। अत: यह कैसी मुबारक किताब है कि इस में सब सामान उच्च स्तर तक पहुंचने के मौजूद हैं।

(मल्फ़ूज़ात ,जिल्द 1, पृष्ठ 31 से 34, प्रकाशन 2018 ई कादियान)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-8)

मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं एक मुक़द्दस और आसमानी पैग़ाम और सारी इन्सानियत के लिए एक बेहतरीन राहनुमा उसूल है

हुज़ूर की तक़ारीर ने मेरे दिल पर बहुत गहरा असर किया, मैं तक़रीर के दौरान रोती रही ,मैं कोशिश करूँगी कि बाक़ी ज़िन्दगी आपके उपदेशों की रोशनी में गुज़ारूँ।

मैंने ऐसी उत्तम मेहमान-नवाज़ी पहले कभी नहीं देखी, मर्द जिस तरह औरतों का सम्मान कर रहे थे, ईसाईयत में औरतों के लिए इतनी इज़्ज़त और सम्मान मैंने नहीं देखा ।

जो बातें जमाअत के ख़िलाफ़ सुनी थीं जलसा के माहौल को देखकर अब मेरा दिल हर लिहाज़ से साफ़ हो गया है , सब तरफ़ भलाई और क़ुरआन तथा हदीस की शिक्षा थी, हुज़ूर के आने पर बहुत सुकून मिलता था, जलसा के दौरान ही मैंने फ़ैसला किया कि अब मैं भी अहमदियत में दाख़िल होती हूँ।

हुज़ूर की तक़ारीर का बहुत गहरा असर हुआ है,एक दूसरे से हमदर्दी , हुकूमतों को समझाना और आपके शब्द ऐसे थे कि अगर दुनिया उन पर अनुकरण करे तो यह दुनिया बहुत अच्छी हो जाए और एक अमन वाली दुनिया बन जाए।

मुझे जिस बात ने सबसे ज़्यादा प्रभावित क्या वह इमाम जमाअत अहमिदया के साथ ज़ाती मुलाक़ात का अनुभव था,मैं इमाम जमाअत को क़रीब से देख रहा था कि आपकी शख़्सियत में किस क़दर क़ुव्वत जाज़िबीयत है और आपके चेहरा पर किस क़दर सुकून है , मैं बिना अतिश्योक्ति के कहता हूँ कि आपकी ज़ात साक्षात अमन तथा सलामती है।

यह जमाअत पूरी तरह से अल्लाह तआला की राह पर चल रही है , मेरे दल ने उसकी तसदीक़ की है और गवाही दी है कि यह जमाअत सच्ची है, वह वक़्त कब आएगा जब यह जमाअत पूरी दुनियामें फैल जाएगी।

इस जगह पर सही इस्लामी शिक्षाओं का ज़हूर हो रहा था, जमाअत के ख़लीफ़ा की बातें सुनकर मेरा पुख़्ता ईमान है कि सारी दुनिया के लोग इस पैग़ाम और रास्ता को धारण कर लेंगे जो अल्लाह तआला की तरफ़ से शुरू हुआ है।

माटो मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं एक ऐसा वाहिद पैग़ाम है जो बहुत मुक़द्दस पैग़ाम है मानो आसमानी पैग़ाम है,यह माटो सारी इन्सानियत के लिए एक बेहतरीन राहनुमा उसूल है, हुज़ूर से मुलाक़ात ने मुझ पर एक अजीब असर किया, जब मैंने आपका हाथ छुआ तो मेरे जिस्म में बिजली की लहरें दौड़ें, आप में एक रुहानी ताक़त है।

जलसा सालाना जर्मनी 2018 में शामिल होने वाले मेहमानान किराम के ईमान अफ़रोज़ प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

नाईजर , बोरकीना फासो और गिनी कनाकरी के वफ़दों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार नाईजर , बोरकीना फासो और गिनी कनाकरी से आने वाले वफ़दों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। यह मुलाक़ात दाई इलल्लाह वाले कमरे में हुई। नाईजर से दस लोगों और बोरकीना फासो से आठ लोगों पर आधारित वफ़द आया था जब कि गिनी कनाकरी से तीन लोगों पर आधारित वफ़द शामिल हुआ।

नाईजर से आने वाले एक अहमदी इमाम IDI KAMAYE साहिब ने निवेदन किया कि जलसा सालाना के सारे प्रबन्ध बहुत अच्छे थे। किसी जगह कोई कमी नज़र नहीं आई। यह मेरा पहला जलसा सालाना है और मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर को अपने सामने इतने क़रीब से देखा है। यहां के प्रबन्ध करने वालों ने हमारा बहुत अच्छा ख़्याल रखा है।

एक लोकल मिशनरी LAWALI CHAIBOU OUMAR साहिब ने निवेदन किया कि जलसा सालाना बहुत अच्छा गुज़रा। हमारे लिए दुआ करें कि नाइजर देश में भी अल्लाह तआला हमें सफलताएं प्रदान करे। बहुत से मुख़ालिफ़ इमाम ऐसे हैं जो स्थायी हमारा विरोध करते हैं और हमें तंग करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जो मुख़ालिफ़ इमाम हैं वे तो विरोध करेंगे। पाकिस्तान में जितना मौलवी तंग करते हैं उतना तंग तो नहीं करते। वहां हुकूमत इन मौलवियों के साथ मिली हुई है। अफ़्रीक़ा के इमामों में शराफ़त है। उनको समझाओ तो समझ जाते है। उन के लिए दुआ करते रहें और हिक्मत के साथ उनको तब्लीग़ करते रहें।

एक स्थानीय मुअल्लिम ने निवेदन किया कि मुल्क के आर्थिक हालात काफ़ी ख़राब है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : जब कोई क़ौम अपने आपको बेहतर करने का इरादा करे तो तब ही कौमें बेहतर होती हैं और उनके हालात तबदील होते हैं। जमाअत अहमिदया उस के लिए भी कोशिश कर रही है।

नाईजर से आने वाले सदर मजलिस अंसारुल्लाह LOUE SEYDOU साहिब ने निवेदन किया कि मैं असल में एवरीकोस्ट से हूँ और पिछले दस साल से नाइजर में निवासी हूँ। इस से पहले बोरकीना फासो और नाईजेरिया में भी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य हासिल कर चुका हूँ। जलसा सालाना जर्मनी के सारे प्रबन्ध बहुत अच्छे थे। एक लीडर ,एक कम्यूनिटी का नज़ारा हमने यहां देखा है। महोदय ने निवेदन किया कि नाईजेरिया मैं 97 फ़ीसद मुसलमान हैं और अरब देशों ने यहां बहुत INVEST किया हुआ है। हमारे मुल्क में अहमदियत ने ही सच्चाई दिखाई है। नाईजरया जमाअत के लिए दुआ की दरख़ास्त है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने नाइजर से आने वाले मुबल्लिग़ सिलसिला को हिदायत फ़रमाई कि कोशिश कर के अपनी सारी जमाअतों में एम. टी.ए लगाऐं। इस पर मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि मर्कज़ से आर्कीटेक्ट ऐंड इंजीनियरज़ सोलर सिस्टम और ऐम. टी. ए लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

मुल्क गिनी कनाकरी से आने वाले मेहमान डाक्टर मुहम्मद अवाडा साहिब ने निवेदन किया कि वह गिनी कनाकरी के एक बड़े हस्पताल के नेशनल डायरेक्टर हैं और मूल रूप में लेबनान से हैं। लेकिन एक लंबे समय से गिनी कनाकरी में आबाद हैं। महोदय ने निवेदन किया कि वह हुज़ूर अनवर की सादगी , विनम्रता , लीडरशिप की बहुत क़दर करते है। अल्लाह तआला मुझे भी आजिज़, शुक्र करने वाला और सब्र करने वाला बंदा बनाए। मैं आपके लिए , आपकी फ़ैमिली के लिए और जमाअत के लिए दुआ करता हूँ। आप बहुत प्यार करने वाले है। यहां आकर मुझे मौक़ा मिला है और मैंने एक नई दुनिया देखी है। आप लोग ही वास्तविक इस्लाम पर अनुकरण करने वाले हैं।

गिनी कनाकरी से आने वाले एक अहमदी दोस्त मुहम्मद ALLASSANE AKOB साहिब ने निवेदन क्या कि मेरा असल वतन बेनिन है और मैं पिछले 30 साल से गिनी कनाकरी में हूँ। और 1987 ई से अहमदी हूँ। यह जलसा देखकर बहुत

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

क़यामत के दिन एक ऐसी क़ौम लाई जाएगी जिनके पास नेकियां तिहामा के पहाड़ों जैसी होंगी लेकिन जब उन्हें पेश किया जाएगा तो अल्लाह तआला उनके सारे कर्म नष्ट कर देगा और फिर उन्हें आग में डाल देगा..... ये ऐसे लोग होंगे जो रोज़े रखते होंगे, नमाज़ें पढ़ते होंगे और रात को बहुत थोड़ा सोते भी होंगे, नफ़ल भी पढ़ते होंगे लेकिन जब कभी उनके सामने हराम पेश किया जाएगा वे उस पर टूट पड़ेंगे।

अपनों ने भी अगर कोई ज़ुल्म किया है या ग़लती की है तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ना सिर्फ इस से बेज़ारी का इज़हार फ़रमाया और रोका बल्कि उस का बदला भी दिया। उनको दियत भी अदा की और पीड़ित की सन्तावना के सामान पहुंचाने की हर संभव कोशिश की।

अगर दूसरी अधिक है ,सवारी नहीं है, वक़्त नहीं होता तो ....अहमदियों को भी चाहिए कि अपने घरों में नमाज़ सेंटर बनाएँ और पड़ोसी इकट्ठे हो कर वहां जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ा करें।

अल्लाह तआला सब को इन आदेशों पर अनुकरण की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मुर्ति बदरी अस्हाबे रसूल हज़रत तुलैब बिन उमैर, हज़रत सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह और हज़रत इत्तबअन बिन मालिक रज़ी अल्लाह अन्हुम व रज़ो अन्हुम की सीरत मुबारका का वर्णन।

मुकर्रम ग़ुलाम मुस्तफ़ा ऐवान साहिब और मुकर्रमा अमतुल हई साहिबा पत्नी मुकर्रम मुहम्मद नवाज़ साहिब काठगढ़ी की वफ़ात पर उनका ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 मार्च 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन बदरी सहाबा का ज़िक्र करूँगा उनमें से पहला ज़िक्र हज़रत तुलेब बिन उमैर रज़ि का है। उनकी कुनियत अबू अदी थी। उनकी माता का नाम अरवा था जो अब्दुल मुतलिब की बेटी थीं, जो आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी थीं। आपकी कुनियत अबू अदी है जैसा कि मैंने वर्णन किया और आप आरम्भिक इस्लाम क़बूल करने वालों में शामिल थे। आप ने उस वक़्त इस्लाम क़बूल किया जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दारे अरक़म में थे।

(असदुल ग़ाबह: जिल्द 3 पृष्ठ 93 तुलैब बिन उमैर दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान वर्णन करते हैं कि हज़रत तुलैब बिन उमैर दारे अरक़म में ईमान लाए थे। फिर आप वहां से निकल कर अपनी माता के पास गए और उन्हें कहा कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी धारण कर ली है और अल्लाह रब्बुल आलमीन पर ईमान ले आया हूँ। आपकी माता ने कहा कि तुम्हारी मदद और सहायता के ज़्यादा हक़दार तुम्हारे मामो के बेटे ही हैं अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। उन्होंने समर्थन किया। बड़ा अच्छा क्या तुम ईमान ले आए। फिर कहने लगीं कि ख़ुदा की क़सम! अगर हम औरतों में भी मर्दों जैसी ताक़त होती तो हम भी उनकी पैरवी ज़रूर करतीं और उनकी हिमायत और प्रतिरक्षा करतीं। हज़रत तुलैब ने अपनी माता से कहा फिर आप इस्लाम क़बूल कर के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण क्यों नहीं कर लेतीं? अब ये जज़्बात हैं आपके तो उन्होंने कहा कि आपके भाई हमज़ह रज़ि भी तो मुसलमान हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि मैं अपनी बहनों का व्यवहार देख लूं फिर में भी उनमें शामिल हो जाऊँगी। हज़रत तुलैब कहते हैं कि मैंने उनसे कहा कि मैं अल्लाह का वास्ता देकर आपसे कहता हूँ कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जाएं और उन्हें सलाम कहें और उनकी तसदीक़ करें और गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इस पर आपकी माता कहने लगीं कि मैं भी गवाही देती हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इस के बाद वह अपनी ज़बान के साथ भी आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिरक्षा क्या करती थीं और अपने बेटे को भी आपकी मदद और इताअत का कहा करती थीं।

(अलमुसतदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 266 किताब मारफ़तुस्सहाब: ज़िक्र मनाक़िब तुलैब बिन उमैर रज़ि हदीस 5047 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

उनके बारे में आता है कि आप वह पहले आदमी हैं जिन्होंने इस्लाम में सबसे पहले किसी मुशरिक को आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुस्ताख़ी की वजह से ज़ख़्मी किया था। इस का विस्तार यह है कि एक बार औफ़ बिन सबुरत सहमी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुरा-भला कह रहा था। हज़रत तुलैब ने ऊंट के जबड़े की हड्डी उठाई और उसे मार कर ज़ख़्मी कर दिया। किसी ने उनकी माँ अरवया को शिकायत की कि आप देखती नहीं कि आपके बेटे ने क्या किया है? तो उन्होंने जवाब दिया कि

اِنَّ طُلَيْبًا نَصَرَ ابْنَ خَالِهٖ
وَاسَاهُ فِيْ ذِيْ دَمِهٖ وَمَالِهٖ

अर्थात तुलेब ने अपने मामू के बेटे की मदद की है। उसने अपने ख़ून और अपने माल के द्वारा उस के ग़म को दूर किया। कुछ के अनुसार आप ने जिस आदमी को मारा था उस का नाम अबू इहाब बिन अज़ैर दारमी था और कुछ रवायात के अनुसार वह आदमी जिसको हज़रत तुलैब रज़ि ने ज़ख़्मी किया था वो अबूलहब या अबु जहल था। एक रिवायत के अनुसार जब आप के हमला करने के बारे में आप की माता से शिकायत की गई तो उन्होंने कहा कि तुलैब रज़ि की ज़िन्दगी का सबसे बेहतरीन दिन वही है जिस दिन वह अपने मामू के बेटे अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिरक्षा करे जो कि अल्लाह तआला की तरफ़ से हक़ के साथ आया है।

(अल्असाबा जिल्द 3 पृष्ठ 439 तुलैब बिन उमैर,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई) (अलमुस्तदरक अलस्सीहैन लिल्हाकिम जिल्द 4 पृष्ठ 57 किताब मारफ़तुस्सहाब: ज़िक्र अरवा बिन्त अब्दुल मुतलिब हदीस 6868 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत तुलैब रज़ि हब्शा की तरफ़ हिजरत करने वाले मुसलमानों में शामिल थे लेकिन जब हब्शा में क़ुरैश के मुसलमान होने की अफ़्वाह पहुंची तो हब्शा से कुछ मुसलमान वापस मक्का तशरीफ़ ले आए। हज़रत तुलैब रज़ि भी उनमें शामिल थे।

(सीरत इब्न हिशाम पृष्ठ 169 ज़िक्र मालकी रसूलुल्लाह मिन क़ौमही मन अल आज़ी, दार इब्ने हज़म बेरूत 2009 ई)

जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है और हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब के

ख़्याल में तो कुछ इतिहास कार हैं,सब नहीं (जिन्होंने ये वर्णन किया है) कि अभी इन मुहाजरीन को हब्शा में गए ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि उड़ती हुई अफ़्वाह पहुंची कि सारा क़ुरैश मुसलमान हो गए हैं और मक्का बिलकुल अमन में आ गया है। अत: कुछ लोग बग़ैर सोचे समझे वापस आ गए और फिर पता लगा कि ख़बर झूठी है। इस की तफ़सील में चंद हफ़्तों पहले ख़ुत्बों में वर्णन कर चुका हूँ। बहरहाल वापस आए, तो पता लगा। जब हक़ीक़त पता लगी तो कुछ ने वहां मक्का के रईसों की पनाह ली, सरदारों की पनाह ली और कुछ वापस चले गए क्योंकि वे तो बिलकुल झूठ था और क्यों ये अफ़्वाह हुई थी उस का वर्णन मैं पहले भी कर चुका हूँ इसलिए यहां वर्णन की ज़रूरत नहीं है।

बहरहाल जब वे सहाबा इस वजह से वापस चले गए थे कि क़ुरैश के ज़ुलम और तकलीफ पहुंचाने से जो थी वे दिन प्रितदिन बढ़ रही थी और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर और मुसलमान भी छुप छुप कर धीरे-धीरे हिजरत कर रहे थे। कहा जाता है कि मुहाजरीन हब्शा की संख्या 101 तक पहुंच गई थी जिन में 18 औरतें भी थीं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बहुत थोड़े मुसलमान रह गए थे। इस वापस आने के बाद जो दुबारा हिजरत की और इस के बाद भी जो मुसलमान हिजरत कर के गए इसी हिजरत को इतिहासकार हिजरत हब्शा सानिया कहते हैं।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्न निबय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए 147, 149)

हज़रत तुलैब रज़ि मक्का से हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो आप ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा अजलानी के हाँ ठहरे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत तुलैब रज़ि और हज़रत मुनज़िर बन अमरो रज़ि के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाया। हज़रत तुलैब रज़ि ने जंगे बदर में शिरकत की और आप की गिनती बड़े सहाबा में से होती है। आप जंग अजनादैन में शामिल हुए जो जुमादी अल्ऊला 13 हिज्री में हुई और इसी जंग के दौरान 35 साल की उम्र में शहीद हुए। अजनादैन सीरिया में स्थित एक इलाक़े का नाम है जहां 13 हिज्री में मुसलमानों और रुम वालों के मध्य जंग हुई थी। लेकिन कुछ के अनुसार आप जंग यरमूक में शहीद हुए थे।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 91 तुलैब बिन उमैर, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह: जिल्द 3 पृष्ठ 94 तुलैब बिन उमैर दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लुबनान 2003 ई)(मोअज्जम अलबल्दान जिल्द 1 पृष्ठ 129 अजनादीन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम हज़रत सालिम मौला अबी हुज़ैफ: रज़ि है। उनकी कुनियत अबू अब्दुल्लाह थी और पिता का नाम मअक़िल था। हज़रत सालम रज़ि के पिता का नाम मअक़िल था जैसा कि मैंने कहा। ईरान के इलाक़े इसतख़र के रहने वाले थे। उनकी गन्ती बड़े सहाबा में होती है और आप मुहाजरीन में भी शामिल हैं। आप ने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले मदीना की तरफ़ हिजरत की थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सालिम रज़ि और मुआज़ बिन माइज़ रज़ि के मध्य भाईचारा का रिश्ता क़ायम फ़रमाया।

(असदुल ग़ाबह: जिल्द 2 पृष्ठ 382-383 सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत सालिम सुबैतह बिंत यआर के ग़ुलाम थे जो हज़रत अबू हुज़ैफ़ह की बीवी थीं। हज़रत सुबैतह ने हज़रत सालम रज़ि को साइबह करते हुए आज़ाद किया था। इस ज़माने में ग़ुलामों का आम क़ानून यह होता था कि अगर किसी को आज़ाद कर दिया जाए और यह आज़ाद हुए ग़ुलाम अगर मर जाए तो उस के माल का हिस्सादार,जो वारिस होता था वह आज़ाद करने वाला आदमी हुआ करता था और साइबह करते हुए लिखा है अर्थात आज़ाद किया। साइबा इस ग़ुलाम को कहते हैं जिसका मालिक उसे आज़ाद कर दे और इस को अल्लाह के लिए छोड़ दे। इस का यह अर्थ होता है कि अब इस ग़ुलाम के मरने के बाद उस के माल पर आज़ाद करने वाले का कोई हक़ नहीं है। हज़रत सालम रज़ि को हज़रत अबू हुज़ैफ़ह ने अपना मुतबन्नाई (बेटा बना लेना) बना लिया था। उस के बाद आप को सालिम बिन अबी हुज़ैफ़ह भी कहा जाने लगा। हज़रत अबू हुज़ैफ़ह ने अपनी भतीजी फ़ातिमह बिन्त वलीद से उनकी शादी भी करवा दी थी।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 63 सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(उद्धरित अलमुसतदरक अलस्सहीहैन (मुतर्जिम) जिल्द 4 पृष्ठ 434 (हाशिया) इश्तियाक़ ए मुश्ताक़ प्रिंटर्ज़ लाहौर 2012 ई)

कहा जाता है कि जब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ مَوَالِيْكُمْ ؕ وَ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ وَ لٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

(अल् अहज़ाब :6)अनुवाद इस आयत का यह है कि चाहिए कि इन मुंह बोले बेटों को उनके बापों का बेटा कह कर पुकारो, यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इंसाफ वाला काम है और अगर तुमको मालूम ना हो कि उनके बाप कौन हैं तो (बहरहाल) वे तुम्हारे धार्मिक भाई हैं और धार्मिक दोस्त हैं और जो तुम ग़लती से पहले कर चुके हो उस के बारे में तुम पर कोई गुनाह नहीं लेकिन जिस बात पर तुम्हारे दिल पुख़्ता इरादा कर बैठे हूँ (वह काबिले सज़ा है) और (हर तौबा करने वाले के लिए) बहुत बख़्शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।

कहते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो उस के बाद हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि कहलाने लगे। पहले अबू हुज़ैफ: रज़ि के बेटे कहलाते थे लेकिन बाद में जब उनको आज़ाद कर दिया तो फिर यह आज़ाद किए हुए ग़ुलाम या दोस्त बन गए। मुहम्मद बिन जाफ़र वर्णन करते हैं कि जब हज़रत अबू हुज़ैफ: रज़ि और हज़रत सालिम मौला अबी हुज़ैफ: रज़ि ने मक्का से मदीना की तरफ़ हिजरत की तो दोनों ने हज़रत अबाद बिन बिशर रज़ि के घर निवास किया।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 62 अबू हुज़ैफ़ह बिन उतबा दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत इब्न उम्र रज़ि से रिवायत है कि जब अव्वलीन मुहाजरीन मक्का से मदीना आए तो उन्होंने क़बा के क़रीब उस्बह के मुक़ाम पर क़ियाम किया। हज़रत सालिम रज़ि उनकी इमामत करवाया करते थे क्योंकि वे इन सबसे ज़्यादा क़ुरआन करीम जानते थे।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 64 सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

मसऊद बिन हुनैदह वर्णन करते हैं कि जब हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ क़बा में क़ियाम किया। वहां एक मस्जिद देखी जिसमें सहाबा बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ मुँह कर के नमाज़ अदा किया करते थे और हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि उन्हें नमाज़ पढ़ाया करते थे।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 4 पृष्ठ 233 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत सालिम रज़ि क़ुरआन करीम के क़ारी थे। आप उन चार सहाबियों में शामिल थे जिनके बारे में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि उनसे क़ुरआने करीम की तालीम हासिल करो।

(असदुल ग़ाबह: जिल्द 2 पृष्ठ 382 सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि इल्म तथा फ़ज़ल में भी कुछ आज़ाद किए ग़ुलामों ने बहुत बड़ा सम्मान हासिल किया। अत: सालिम बिन मअक़िल, मौला अबी हुज़ैफ: रज़ि विशेष उल्मा सहाबियों में से समझे जाते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन शरीफ़ की तालीम के लिए जिन चार सहाबियों को मुक़र्रर फ़रमाया था उन में से एक सालिम रज़ि भी थे।

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए पृष्ठ 399)

फिर इस बारे में तारीख़ के अनुसार मज़ीद वर्णन करते हैं कि सालिम बिन मअक़िल रज़ि .....जो अबू हुज़ैफ: रज़ि बिन उतबह के मामूली आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे मगर वह अपने इलम तथा फ़ज़ल में इतनी तरक़्क़ी कर गए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिन चार सहाबियों को क़ुरआन शरीफ़ की तालीम के लिए मुसलमानों में मुक़र्रर फ़रमाया था और इस मामला में मानो उन्हें अपना नायब बनने के योग्य समझा था उनमें एक सालिम रज़ि भी थे।

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए पृष्ठ 403)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन चार सहाबियों से क़ुरआन करीम की तालीम हासिल करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि नंबर एक, फिर हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि ,नंबर तीन हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि और नंबर चार हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि।

(सही अल्बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल अस्हाब उन्नबी बाब मनाक़िब सालिम

मौला अबी हुज़यु़फ़ह हदीस 3758)

एक रिवायत में है कि एक बार हज़रत आईशा रज़ि को आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आने में कुछ देर हो गई। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देर से आने का कारण पूछा तो कहने लगीं कि एक क़ारी निहायत ही ख़ुश-अल्हानी से क़ुरआन की तिलावत कर रहा है इस की तिलावत सुनने लग गई थी जिस वजह से देर हो गई। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चादर ओढ़ी और बाहर निकल कर देखा तो हज़रत सालम रज़ि तिलावत कर रहे थे। इस पर आपने फ़रमाया शुक्र है अल्लाह तआला का कि जिसने तुम जैसे क़ारी को मेरी उम्मत में से बनाया।

(असदुल ग़ाबह: जिल्द 2 पृष्ठ 383 सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

जंग उहद के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो ज़ख़्मी हुए तो आपके ज़ख़्म धोने का सौभाग्य भी हज़रत सालिम रज़ि को नसीब हुआ। क़तादह से रिवायत है कि जंगे उहद के दिन आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माथा और दाँत (जो कुचली और सामने के दाँतों के मध्य थे) ज़ख़मी हो गए थे। हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़ख़्म धो रहे थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे थे कि वह क़ौम कैसे मुक्ति पा सकती है जिसने अपने नबी के साथ ऐसा सुलूक किया। इस अवसर पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

لَيۡسَ لَكَ مِنَ الۡاَمۡرِ شَیۡءٌ اَوۡ يَتُوۡبَ عَلَيۡهِمۡ اَوۡ يُعَذِّبَهُمۡ فَاِنَّهُمۡ ظٰلِمُوۡنَ

(आले इमरान:129)अर्थात तेरे पास कुछ इख़तियार नहीं चाहे तौबा क़बूल करते हुए झुक जाए या उन्हें अज़ाब दे। वे बहरहाल ज़ालिम लोग हैं।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 2 पृष्ठ 35 मन क़तल मिनल मुस्लिमीन यौम उहद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत सालिम रज़ि वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन एक ऐसी क़ौम लाई जाएगी। ये बड़े ग़ौर से सुनने वाली बात है कि क़यामत के दिन एक ऐसी क़ौम लाई जाएगी जिनके पास नेकियां तिहामा के पहाड़ों (तिहामा जो था अरब के तट के साथ एक निचला इलाक़ा है जो सीना से शुरू हो कर अरब के उत्तर और दक्षिण की तरफ स्थित है। तिहामा के पहाड़ों का एक सिलसिला है जो खाड़ी क़ुलज़म से शुरू होता है। तो आपने फ़रमाया कि उनकी नेकियां तिहामा के पहाड़ों) की जैसी होंगी लेकिन जब उन्हें पेश किया जाएगा तो अल्लाह तआला उनके सारे कर्म नष्ट कर देगा और फिर उन्हें आग में डाल देगा। इस पर हज़रत सालम रज़ि ने निवेदन की कि हे रसूलुल्लाह ! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान। हमें ऐसे लोगों की निशानदेही फ़र्मा दें ताकि हम उन्हें पहचान सकें। कसम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया है मैं अपने बारे में डरता हूँ कि कहीं में भी उनमें शामिल ना हो जाऊं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ये ऐसे लोग होंगे , (ग़ौर से सुनने वाली बात है कि ऐसे लोग होंगे) जो रोज़े रखते होंगे, नमाज़ें पढ़ते होंगे और रात को बहुत थोड़ा सोते भी होंगे, नफ़ल भी पढ़ते होंगे लेकिन जब कभी उनके सामने हराम पेश किया जाएगा वे उस पर टूट पड़ेंगे। इस के बावजूद दुनियावी लालचों में पड़ जाऐंगे और ये नहीं देखेंगे हराम किया है,हलाल किया है। इस वजह से अल्लाह उनके कर्म नष्ट कर देगा।

(उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामीया जिल्द 6 पृष्ठ 851 ज़ेर लफ़्ज़ तिहामा, दानिश गाह पंजाब लाहौर 2005 ई)

(मारफ़त: अस्सहाबा ले अबी नईम जिल्द 2 पृष्ठ 483 सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह हदीस नंबर 3456 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2002 ई)

हज़रत सौबान रज़ि से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया में अपनी उम्मत में कुछ ऐसे लोगों के बारे में जानता हूँ जो क़यामत के दिन तिहामा के पहाड़ों जितनी चमकती हुई नेकियों के साथ आएँगे लेकिन अल्लाह तआला उनको व्यर्थ क़रार देकर हवा में बिखेर देगा। इस पर एक अन्य रावी का एक वर्णन है। सौबान रज़ि ने निवेदन क्या हे रसूलुल्लाह ! हमारे लिए उनकी कोई निशानी बता दें। हमें उनके बारे में वज़ाहत से बता दें ताकि हम उन में से ना हो जाएं और हमें इल्म ही ना हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे ही भाई हैं, तुम्हारी ही जिल्दों के से हैं अर्थात तुम्हारी जिन्स के लोग हैं, ऐसे ही रंग हैं। वे रात के वक़्त में इबादत इत्यादि के लिए भी ऐसे ही वक़्त लेते होंगे जैसे तुम लेते हो, इबादत करने वाले भी होंगे लेकिन वे ऐसे लोग हैं कि जब अल्लाह के महारिम की तरफ़ जाते हैं तो इस की बेहुरमती और उन्हें नष्ट करते हैं।

(सुनन इब्न माजा किताबुल ज़ुहद बाब ज़िक ज़ुनूब हदीस नंबर4245)

जिन चीज़ों को अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है, हराम फ़रमाया है उनको फिर एहसास ही नहीं होता कि क्या चीज़ हलाल है और क्या हराम है और फिर दुनिया उन पर ग़ालिब आ जाती है। अत: यहां एक हमेशा सोचने वाला और बड़े ख़ौफ़ का स्थान है। अल्लाह तआला हर एक को हमेशा अपनी समीक्षा लेने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाता रहे।

हज़रत अब्दुल्लाह बन उमर रज़ि के बेटों के नाम सालिम, वाक़िद और अब्दुल्लाह थे। जो उन्होंने कुछ किबार सहाबा के नाम पर रखे थे। उनमें से एक का नाम सालिम भी था जो सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि के नाम पर रखा गया। सईद बिन अलमुसय्यब् वर्णन करते हैं कि मुझ से हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने फ़रमाया कि क्या तुम जानते हो मैंने अपने बेटे का नाम सालिम क्यों रखा है? कहते हैं मैंने निवेदन की कि मैं नहीं जानता। इस पर फ़रमाने लगे कि मैंने अपने बेटे का नाम हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि के नाम पर सालिम रखा है। फिर कहने लगे कि क्या तुम जानते हो कि मैंने अपने बेटे का नाम वाक़िद क्यों रखा है?मैंने कहा नहीं। नहीं जानता तो कहने लगे हज़रत वाक़िदु बिन अब्दुल्लाह यर्बूई रज़ि के नाम पर रखा है। फिर पूछा कि क्या तुम जानते हो कि मैंने अपने बेटे का नाम अब्दुल्लाह क्यों रखा है। जब मैंने कहा कि नहीं जानता तो कहने लगे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रजि के नाम पर अब्दुल्लाह रखा है।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 4 पृष्ठ 119 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

तो सहाबा जो बड़े किबार सहाबा थे उनकी बड़ी क़दर किया करते थे और अपने बच्चों के नाम किसी ख़ास मक़सद से पुराने बुज़ुर्गों के नामों पर रखा करते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि से रिवायत है कि एक जंग में हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। कुछ लोग घबरा गए थे। जंग की बड़ी शिद्दत हुई तो कुछ लोग घबरा गए। कहते हैं कि मैं अपना हथियार लेकर निकला तो मेरी नज़र हज़रत सालिम मौला अबी हुज़ैफ: रज़ि पर पड़ी। उनके पास भी अपने हथियार थे। चेहरे पुर वक़ार और शान्त था। कोई घबराहट नहीं थी और वह पेशक़दमी कर रहे थे। मैंने कहा कि मैं इस नेक आदमी के पीछे चलूँगा यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुंच गए और आप के साथ बैठ गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़गी की हालत में निकले और फ़रमाने लगे कि लोगो ये कैसी घबराहट और कैसा ख़ौफ़ है !क्या तुम इस बात से आजिज़ आ गए कि जैसी हिम्मत इन दोनों मोमिनों ने दिखाई है तुम भी दिखाओ। (अत्तारीख़ुल कबीर जिल्द 6 पृष्ठ 127 बाब अलऐन हदीस 8538 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)कोई घबराहट नहीं होनी चाहिए। जिस तरह कि हज़रत सालिम और साथ उनके यह थे जिन्होंने अहद किया और बग़ैर किसी घबराहट के इस कड़े वक़्त में भी बाक़ायदा डटे रहे।

इब्ने इसहाक़ वर्णन करते हैं कि फ़तह मक्का के अवसर के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा के इर्द-गिर्द इलाक़ों में छोटे छोटे लश्कर भेजे ताकि वे इन क़बीलों को इस्लाम की तरफ़ बुलाऐं लेकिन इन लश्करों को जंग करने का हुक्म नहीं दिया था। तब्लीग़ करने के लिए भेजा था और यह फ़रमाया था कि जंग नहीं करनी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ालिद रज़ि बिन वलीद को क़बीला बनू जज़ीमह की तरफ़ दावते इस्लाम के लिए भेजा। जब उन्होंने हज़रत ख़ालिद को देखा तो हथियार उठा लिए। हज़रत ख़ालिद रज़ि ने उनसे कहा लोग मुसलमान हो चुके हैं, अब हथियार उठाने की ज़रूरत नहीं है। उनमें से एक आदमी जहदम ने कहा कि मैं हरगिज़ हथियार नहीं डालूँगा। यह ख़ालिद है। मुझे एतबार नहीं। अल्लाह की क़सम! हथियार डालने के बाद क़ैद होना है और क़ैद होने के बाद गर्दन उड़ाया जाना है। इस की क़ौम के कुछ अफ़राद ने उसे पकड़ लिया और कहा हे जहदम! क्या तो चाहता है कि हमारा ख़ून बहाया जाए। यक़ीनन लोगों ने हथियार डाल दिए हैं और जंग ख़त्म हो चुकी है। फिर उन्होंने इस से हथियार छीन लिए और ख़ुद भी हथियार डाल दिए। जब उन्होंने हथियार रख दिए तो उस के बाद फिर हज़रत ख़ालिद रज़ि ने उनमें से कुछ को क़तल कर दिया और कुछ को क़ैदी बना लिया और हम में से हर आदमी को इस का क़ैदी सपुर्द कर दिया और फिर अगले दिन ये हुक्म दिया कि हर आदमी अपने क़ैदी को क़तल कर दे। हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने कहा ख़ुदा की क़सम! मैं अपने क़ैदियों को क़तल नहीं करूँगा और ना ही मेरा कोई साथी ऐसा करेगा।

इब्न हिशाम वर्णन करते हैं कि एक आदमी उन में से निकल कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सारी घटना वर्णन कर दी। आप ने पूछा कि क्या किसी ने ख़ालिद रज़ि के इस व्यवहार को नापसंद भी किया? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पसंद नहीं आया कि इस तरह हो। उन्होंने पूछा नापसंद किया था? उन्होंने निवेदन की ।जी हाँ सफ़ैद रंग के एक मध्य क़द के आदमी ने नापसंदीदगी का इज़हार किया था। ख़ालिद ने उन्हें डाँटा तो वह ख़ामोश हो गए। एक दूसरे आदमी ने जिनका क़द लम्बा था इस कार्य पर नापसंदीदगी का इज़हार किया तो ख़ालिद ने उनसे भी झगड़ा किया। दोनों में तल्ख़-कलामी भी हुई। इस पर हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि ने कहा हे रसूलुल्लाह ! मैं इन दोनों को जानता हूँ। एक मेरा बेटा अब्दुल्लाह है और दूसरे सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि हैं। इब्न इसहाक़ वर्णन करते हैं कि इस के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि को बुला कर फ़रमाया कि इन लोगों की तरफ़ जाओ और मामला देखो कि क्या मामला हुआ है ?क्यों ऐसा हुआ है? और जाहिलियत वाले मामले को अपने क़दमों तले मसल दो। यह बिलकुल जहालत की बातें हुई हैं। इस को बिलकुल ख़त्म कर दो। अत: हज़रत अली रज़ि इस माला को लेकर गए जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें दिया था। हज़रत अली रज़ि को सिर्फ भेजा नहीं बल्कि बहुत सा माल साथ देकर भेजा था और आप ने उन लोगों का जो भी जानी और माली नुक़्सान हुआ था उस की दियत अदा की। माल इसलिए भेजा था कि ग़लत तरीक़े से जो जानी और माली नुक़्सान हुआ है इस की दियत अदा की जाए। इस के बाद भी हज़रत अली रज़ि के पास कुछ माल बच रहा तो आप ने उन लोगों से पूछा क्या किसी जानी और माली नुक़्सान की दियत अदा होना रह गई है? उन्होंने कहा कि नहीं। बड़े इन्साफ़ से सब कुछ हो गया। कुछ नहीं रहा। इस पर हज़रत अली रज़ि ने कहा कि मैं फिर भी इस एहतियात के अधीन जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रहती है ये माल तुम्हें दे देता हूँ क्योंकि जो वह जानते हैं वह तुम लोग नहीं जानते। अत: आप उनको ये माल देकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लौटे और आपको इस की सुचना दे दी कि इस तरह मैं कर आया हूँ। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम ने बख़ूबी इस काम को अंजाम दिया है। फिर आपने क़िबला की तरफ मुंह कर के दोनों हाथ बुलंद कर के तीन बार यह दुआ की कि اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَبْرَأُ اِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ خَالِدُ ابْنُ الْوَلِيْد۔ कि हे अल्लाह! मैं इस से जो ख़ालिद बिन वलीद ने किया है तेरे हुज़ूर बरी होने का इज़हार करता हूँ।

(सीरत इब्न हिशाम पृष्ठ 557-558 बाब मयसर ख़ालिद बिन अल-वलीद बाद अलफ़तह इला बनी जज़ीमा।....दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)(सही अल्बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब बाअस उन्नबी ख़ालिद बिन वलीद इला बनी जज़ीमा हदीस 4339)

यह बड़ा ग़लत काम हुआ है। अत: अपनों ने भी अगर कोई ज़ुल्म किया है या ग़लती की है तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ना सिर्फ इस से बरी होने का इज़हार फ़रमाया और रोका बल्कि उस का बदला भी किया। उनको दियत भी अदा की और पीड़ित की तसकीन के सामान पहुंचाने की हर संभव कोशिश की। बावजूद उस के कि वे लोग दुश्मन भी थे जिन्होंने हथियार उठाए थे लेकिन आपने पसंद नहीं किया कि इस तरह हो। यह था आपके इन्साफ़ का स्तर।

इब्राहीम बिन हनज़लहा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जंग यमामा के दिन हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ: रज़ि से कहा गया कि आप झंडे की हिफ़ाज़त करें जबकि कुछ ने कहा कि हमें आप की जान का डर है। इसलिए हम आप के इलावा किसी और के सपुर्द झंडा करते हैं। इस पर हज़रत सालम रज़ि ने कहा तब तो मैं बहुत बुरा हामिले क़ुरआन हूँ। अर्थात मुझे तो क़ुरआन करीम का बड़ा इल्म है और इस इल्म रखने के बावजूद अगर मैं इस पर अमल करने वाला नहीं तो फिर यह बहुत बुरी बात है या यह कि अगर जान के ख़ौफ़ से एक अहम कर्तव्य जो है और क़ुरआन करीम का जो हुक्म है इस से मैं बचने वाला बनूं तो ऐसे इल्म क़ुरआन का फिर क्या फ़ायदा? बहरहाल लड़ाई के दौरान जब आप का दायाँ हाथ कट गया तो आप ने अपने बाएं हाथ में झंडा थामे रखा और जब बायां हाथ भी कट गया तो झंडे को गर्दन में दबा लिया और यह पढ़ने लगे कि وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ (आले इम्रान:145) وَ كَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ (आले इम्रान:147) अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल अल्लाह के एक रसूल हैं और कितने ही नबी थे जिनके साथ मिलकर बहुत से रब्बानी लोगों ने जंग की । जब हज़रत सालिम रज़ि गिर गए तो साथियों से पूछा कि अबू हुज़ैफ: रज़ि का क्या हाल है। लोगों ने जवाब दिया कि वह शहीद हो गए हैं। फिर एक और आदमी का नाम लेकर पूछा कि उसने क्या-किया तो जवाब मिला कि वह भी शहीद हो गए हैं इस पर हज़रत सालम रज़ि ने कहा कि मुझे इन दोनों के मध्य में लिटा दो। जब आप शहीद हो गए तो बाद में हज़रत उमर रज़ि ने उनकी मीरास सुबैतह बिन्त यआर के पास भेजी। उन्होंने हज़रत सालिम रज़ि को आज़ाद किया था लेकिन उन्होंने इस मीरास को क़बूल ना किया और साथ यह कहा कि मैंने उनको साइबह बना कर अर्थात केवल ख़ुदा की राह में आज़ाद किया था। इस के बाद हज़रत उमर रज़ि ने उनकी मीरास को बैयतुल माल में जमा करवा दिया।

(असदुल ग़ाबह: जिल्द 2 पृष्ठ 384 सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

मुहम्मद बिन साबित वर्णन करते हैं कि जंग यमामा में जब मुसलमान बिघर गए तो हज़रत सालम रज़ि ने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इस तरह नहीं किया करते थे अर्थात भाग नहीं जाया करते थे। उन्होंने अपने लिए एक गढ़ा खोदा और इस में खड़े हो गए। उस दिन आप के पास मुहाजरीन का झंडा था। इस के बाद आप बहादुरी से लड़ते लड़ते शहीद हुए। आप जंग यमामा जो 12 हिज्री में हुई थी इस में शहीद हुए और यह घटना हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह के ख़िलाफ़त के ज़माना में हुई। तबक़ातुल कुबरा का यह उद्धरण है।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 64-65 सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि से रिवायत है कि जब हज़रत सालिम रज़ि शहीद हुए तो लोग कहते थे कि मानो क़ुरआन का एक चौथाई हिस्सा चला गया।(अलमुसतदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3पृष्ठ 251-252 किताब मारफ़त अस्सहाबा बाब ज़िक्र मनाक़िब सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ह हदीस 5004, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)अर्थात जिन चार उल्मा का नाम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लिया था कि उनसे क़ुरआन सीखो, उनमें से एक चला गया।

अगले जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत इतबान बिन मालिक रज़ि । हज़रत इतबान बिन मालिक रज़ि का सम्बन्ध ख़ज़रज की शाख़ बनू सालिम बिन औफ़ से था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के और हज़रत उमर रज़ि के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया। आप जंगे बदर, उहद और ख़ंदक़ में शामिल हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में में आप की आंखों की रोशनी जाती रही थी। आप की वफ़ात हज़रत मुआिवया रज़ि के दौरे हुकूमत में हुई।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 415-416 इतबान बिन मालिक प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में पधारे तो हज़रत इतबान बन मालिक रज़ि ने अपने साथियों के साथ आगे बढ़कर आपकी ख़िदमत में निवेदन किया कि इन के यहां क़ियाम करें लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी ऊंटनी को छोड़ दो कि यह इस वक़्त मॉमूर है अर्थात जहां ख़ुदा की इच्छा होगा वहां यह ख़ुद बैठ जाएगी।

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

(सीरत इब्न हिशाम पृष्ठ 228-229 एतराज़ुल क़बाइल लहू तबग़ी नज़ूल इन्दहा प्रकाशन दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन रज़ि हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए पृष्ठ 267-268)

हज़रत उमर रज़ि वर्णन फ़रमाते हैं कि मैं और अन्सार में से मेरा एक पड़ोसी बनू उमय्यह बिन ज़ैद, (बनू उमय्यह बिन ज़ैद बस्ती का नाम है) में रहते थे और यह मदीना के इन गांव में से है जो आस-पास ऊंची जगह पर स्थित थे और हम बारी बारी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाते थे। एक दिन वह जाता था और एक दिन मैं जाता था और जब मैं जाता था तो मैं इस दिन की वह्य इत्यादि की ख़बरें उस के पास लाता और जब वह जाता था तो वह ऐसा ही करता था। कहते हैं कि एक बार मेरा अन्सारी साथी अपनी बारी के दिन गया और आकर मेरे दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाया और मेरे बारे में पूछा क्या वह यहीं हैं? इस पर मैं घबराया और बाहर निकला तो उसने कहा बहुत ही बड़ी घटना हुई है। हज़रत उमर रज़ि ने कहा। यह सुनकर मैं हफ़सा रज़ि के पास गया तो देखता हूँ कि वह रो रही हैं। मैंने पूछा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हें तलाक़ दे दी है? कहने लगीं कि मैं नहीं जानती। फिर मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गया और मैंने खड़े खड़े पूछा क्या आपने बीवीयों को तलाक़ दे दी है? फ़रमाया नहीं। इस पर मैंने कहा अल्लाहो अकबर।

(सही बुख़ारी किताबुल इलम बाब अत्तनावब फिल इल्म हदीस 89)

रिवायात के अनुसार कुछ जगह विस्तार भी मिलता है। लंबी घटना वर्णन हुई है कि एक महीने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने आपको अलग कर लिया था और ना केवल बीवियों से बल्कि सहाबा से भी अलग हो गए थे। इस वजह से ये तास्सुर पैदा हो गया कि तलाक़ दे दी है। किसी वजह से नाराज़गी है। बहरहाल जो भी कारण थे वे अन्य थे लेकिन ये कारण नहीं था।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब ने बुख़ारी की हदीस की व्याख्या में इस बात से कि हज़रत उमर रज़ि ने वर्णन फ़रमाया कि एक दिन मैं जाता था और एक दिन मेरे दूसरे साथी जाते थे लिखा है कि अगर किसी को इल्म सीखने के लिए पूरी फ़राग़त ना मिलती हो तो वह किसी के साथ बारी मुक़र्रर कर सकता है जैसा कि हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत इत्बान रज़ि बिन मालिक अन्सारी के साथ बारी मुक़र्रर की थी। सहाबा के शौक़ का इस से भी पता चलता है कि काम काज छोड़कर तीन चार मील से आकर सारा दिन इसी काम में सिर्फ कर देते।

(सही बुख़ारी किताबुल इलम बाब अत्तनावब फिल इल्म हदीस हदीस 89 जिल्द 1 पृष्ठ 165 नज़ारत इशाअत रब्वाह)

लेकिन अल्लामा ऐनी बुख़ारी की व्याख्या उमदतुल क़ारी में लिखते हैं। कहा जाता है कि पड़ोसी हज़रत इत्बान बिन मालिक रज़ि थे लेकिन सही यह है कि हज़रत उम्र के पड़ोसी औस बिन खौली थे।

(उद्धरित उमदतुल क़ारी जिल्द 20 पृष्ठ 256 किताबुन्निकाह बाब मौएज़्तुर्रजलो इबनतहो ज़ौजहा हदीस 5191दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

बहरहाल हज़रत उमर रज़ि ने तो इस की रिवायत में जो वर्णन फ़रमाया वही वर्णन होता है।

एक रिवायत में है कि हज़रत इत्बान बिन मालिक रज़ि ने जब उनकी आंखों की रोशनी चली गई तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नमाज़ जमाअत के साथ न अदा करने की आज्ञा चाही कि आ नहीं सकता,मस्जिद में नहीं आ सकता मुझे इजाज़त दी जाए। आपने फ़रमाया क्या तुम आज़ान की आवाज़ सुनते हो? हज़रत इत्बान रज़ि ने कहा जी। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको उस की इजाज़त नहीं दी। यह मशहूर हदीस है। अक्सर पेश की जाती है। लेकिन इस की कुछ तफ़सील भी है। सही बुख़ारी की रिवायत से पता चलता है कि बाद में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत इत्बान रज़ि को घर में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त मर्हमत फ़रमाई थी। शुरू में मना किया फिर इजाज़त दे दी। अत: बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत इत्बान बिन मालिक रज़ि अपनी क़ौम की इमामत किया करते थे और वह अन्धे थे और यह कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि हे रसूलुल्लाह ! अंधेरा और सैलाब होता है। बारिश ज़्यादा हो जाती है। अंधेरा होता है। नीचे वादी में पानी बह रहा होता है। मैं अन्धा हूँ। इसलिए हे रसूलुल्लाह ! मेरे घर में नमाज़ पढ़ाए जिसे मैं नमाज़ का स्थान बनाऊँ। एक दिन हाज़िर हुए और यह कहा मेरा यहां आना मुश्किल हो जाता है आप मेरे घर आएं और मेरे घर में मैंने एक जगह बनाई है वहां नमाज़ पढ़ लें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ लाए और पूछा तुम कहाँ पसंद करते हो कि मैं नमाज़ पढ़ूं? उन्होंने घर में एक तरफ़ इशारा किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जगह नमाज़ पढ़ी।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 415 इत्बान बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(सही बुख़ारी किताबुल अज़ान इन बाब अर्रुख़सत फिल मतर वल इल्लत अन यसला हदीस 667)

अगर ख़ास हालात में घर में नमाज़ की इजाज़त दी तो वहां भी बाक़ी रिवायतों से साबित होता है कि आप लोगों को एक जगह जमा कर के वहां नमाज़ पढ़ाया करते थे क्योंकि मौसम की सख़्ती की वजह से रास्ते की रोक की वजह से लोग मस्जिद में जा नहीं सकते थे। तो बहाना कोई नहीं। अगर बाद में इजाज़त दी भी थी तो इसलिए कि वहां उनके घर के एक हिस्सा में जमाअत के साथ नमाज़ हो। अत: इस बात को स्पष्ट करते हुए हज़रत सय्यद वली उल्लाह शाह साहिब सहीह बुख़ारी की किताब अज़ान के बाब अर्रुख़सत फ़िल मतर वल इलल युसल्ली फी रह्लिही अर्थात बारिश या किसी और कारण से अपने अपने ठिकानों में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त की व्याख्या में लिखते हैं कि इमाम मौसूफ़ (अर्थात इमाम बुख़ारी)माज़ूरी के वे हालात पेश कर रहे हैं जिनमें जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने से आज्ञा दिया जाना चाहिए था मगर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें भी घर में अकेले पढ़ने की इजाज़त नहीं दी, (ये आज्ञा नहीं दी कि घर में अकेले पढ़ लिया करो)हालाँकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा यथा संभव आदेशों के पालन में सुविधा के समक्ष रखते थे। यही होता था कि धर्म के मामला में जहां आसानी पैदा हो सकती थी वहां आसानी पैदा की जाए लेकिन आपने उनको अलग पढ़ने की इजाज़त नहीं दी। इजाज़त दी भी तो इस अवस्था में कि जमाअत के साथ पढ़नी है।

फिर लिखते हैं कि हज़रत इत्बान आन्धे थे। रास्ते में नाला बहता था और कुछ रिवायतों में आता है कि उन्होंने घर में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त मांगी तो आपने उन्हें इजाज़त दी मगर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की सूरत में। यह फ़रमाया कि जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ोगे तो इजाज़त है। फिर आप लिखते हैं कि अगर नमाज़ का फर्ज़ अलग पढ़ा जा सकती थी तो आप हज़रत इत्बान रज़ि को मजबूर समझ कर घर में अकेले नमाज़ पढ़ने की ज़रूर इजाज़त देते।

(उद्धरित सही बुख़ारी जिल्द 2 पृष्ठ 66 किताबुल आज़ान बाब अर्रुख़सत फ़िल मतर वल इलल युसल्ली फी रह्लिही हदीस 667 नज़ारत इशाअत रब्वह)

अत: इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि यहां भी अगर दूरी अधिक हैं ,सवारी नहीं है, वक़्त नहीं होता तो जिस तरह कि कई बार कह चुका हूँ अहमदियों को भी चाहिए कि अपने घरों में नमाज़ सेंटर बनाएँ और पड़ोसी इकट्ठे हो कर वहां जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ा करें। अल्लाह तआला सब को इन आदेशों पर अनुकरण की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अब मैं कुछ वफात पाने वालों के बारे में बताऊँगा जिन का अभी जनाज़ा पढ़ा जाएगा। उन में से एक रब्वह के आदरणीय ग़ुलाम मुस्तफ़ा ऐवान साहिब हैं। 16 मार्च को 78 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जन्मजात अहमदी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत आप के दादा दीवान बख़्श साहिब के माध्यम से आई। मरहूम पांचों समय नमाज़ों के पाबंद, तहज्जुद अदा करने वाले, तक़्वा पर चलने वाले, हमदर्द, भलाई चाहने वाले,अच्छे आचरण वाले, मिलनसार, सादा तबीयत के मालिक थे। बड़े दुआ करने वाले थे। मेहमान नवाज़ थे। ग़रीबों का ध्यान रखने वाले थे। रिश्तेदारों का ध्यान रखने वाले थे। धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता करने वाले, नेक, मुख़लिस इन्सान थे। जमाअत के निज़ाम और ख़िलाफ़त से गहरा अक़ीदत का सम्बन्ध था। नौकरी के सिलसिला में यह सऊदी अरब में भी रहे और सऊदी अरब में रहने के दौरान उनको नौ बार हज बैतुल्लाह की तौफ़ीक़ मिली और असंख्य बारा उमरा करने की तौफ़ीक़ मिली। आप को ख़ाना काअबा और मस्जिद नबवी में तामीराती काम करने की भी तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे और एक दिन अचानक जब आपकी तबीयत ख़राब हो गई तो उनको पहली फ़िक्र यही थी कि मैंने हिस्सा जायदाद अदा करना है। अत: अल्लाह तआला ने सेहत दी तो शीघ्र अपनी कुछ जायदाद बेच कर अपना हिस्सा जायदाद अदा किया। उनके पीछे रहने वालों में उनकी पत्नि के इलावा एक बेटा अहमद मुर्तज़ा है जो जर्मनी में है। चार बेटियां हैं। दो दामाद मुहम्मद जावेद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला ज़ेमबिया हैं और जमील अहमद साहिब तबस्सुम मुबल्लिग़ रशिया हैं और बतौर वाक़िफ़ ज़िन्दगी वहां

ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। मरहूम की बेटियां जो इन मुबल्लग़ीन से ब्याही हुई हैं और अपने वाक़िफ़ ज़िन्दगी पतियों के साथ मुल्क से बाहर हैं और देश के बाहर होने के कारण से पिता की वफ़ात के वक़्त वहां जा नहीं सकीं और यह सदमा भी उन को परदेस में बर्दाश्त करना पड़ा। अल्लाह तआला उनको सब्र और हौसला से बर्दाश्त की तौफ़ीक़ दे और मरहूम के स्तर बुलंद फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा आदरणीया अमतुल हई साहिबा पत्नि मुहम्मद नवाज़ साहिब काठगढ़ी का है जिनकी 15 मार्च को वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनका सम्बन्ध कादियान के करीबी गांव बगोल से था। अभी दो साल की थीं कि आपके पिता की वफात हो गई और आपके ताया मुहम्मद इब्राहीम ने उनकी परवरिश की। मरहूमा पैदाइशी अहमदी थीं। उनके ख़ानदान में अहमदियत 1903 ई में आई थी। पाकिस्तान की स्थापना के बाद अपने ताया के ख़ानदान के साथ हिजरत कर के जड़ांवाला आकर निवास शुरू किया और फिर वहां से 1981 ई में उन्होंने बच्चों की शिक्षा इत्यादि के लिए रब्वह हिजरत की और आख़िर दम तक रब्वह में ही निवास किया। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। अल्लाह तआला ने उनको छः बेटों और पाँच बेटीयों से नवाज़ा। एक बेटी उनकी छोटी उम्र में वफ़ात पा गई थीं। अपनी औलाद में से बच्चों को वक़्फ़ करने का सिलसिला शुरू किया और फिर औलाद की औलाद में यह सिलसिला जारी है। उनके बड़े बेटे राना फ़ारूक़ अहमद साहिब नज़ारत दावत इलल्लाह मैं मुरब्बी सिलसिला हैं। छोटे हाफ़िज़ महमूद अहमद ताहिर जामिया अहमदिया तंज़ानिया में उस्ताद के रूप में सेवा कर रहे हैं हैं। माता के जनाज़ा के लिए पाकिस्तान नहीं जा सके थे। इसी तरह एक पोता मुरब्बी सिलसिला है। एक नवासा मुरब्बी सिलसिला घाना में है। एक पोता और एक पोती हाफ़िज़ क़ुरआन हैं और बहुत सारी पोतियों और नवासियों की शादियां उन्होंने मुरब्बियों में, वाक़फ़ीन ज़िन्दगी में की हैं।

उनके बेटे हाफ़िज़ महमूद वर्णन करते हैं कि हमारे माता पिता सारी ज़िन्दगी सिलसिला की ख़िदमत को प्राथमिकता देते रहे और हमें निज़ाम जमाअत और ख़िलाफ़त अहमदिया से जोड़े रखने और नमाज़ जमाअत का पाबंद बनाने के लिए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहते थे। अहमदियत की तब्लीग़ का शौक़ भी बहुत था। माता की तरफ़ से उनकी माता के सारे भाई और बहनें ग़ैर अहमदी थे। उनको यथा सम्भव तब्लीग़ क्या करती थीं। इसी तब्लीग़ के नतीजा में उनके एक भाई अब्दुल हमीद साहिब को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली और उनकी औलाद भी अल्लाह के फ़ज़ल से सिलसिला की ख़ादिम है। शोर कोट में जब यह थीं तो 1953ई और 1974 ई के हालात जमाअत पर बड़े सख़्त थे। उन्होंने यह वक़्त बड़े साहस और दिलेरी से गुज़ारा और किसी किस्म का कोई ख़ौफ़ सामने नहीं आने दिया। यह लिखते हैं कि 1974 ई के फसादों के दौरान ही, एक दिन गांव के नम्बरदार की बीवी हमारे घर में आई और नम्बरदार का पैग़ाम दिया कि अहमदियों के घरों पर हमला करने के लिए जलूस आ रहा है। इसलिए मर्द बाहर खेतों में छिप जाएं और औरतें हमारे घर आ जाएं मगर हमारी माता साहिबा ने जवाब दिया कि हम घर में ही रहेंगी चाहे मरें या जिएँ। और इन्ही दिनों एक बार उनके घर पर जलूस आ गया तो घर में मर्द कोई नहीं था। सिर्फ बहनें थीं और उनकी माता थीं। यह कहते हैं कि जलूस बाहर था। हाथ में एक कुल्हाड़ी लेकर घर के सेहन में टहलती रहें और बाहर से किसी ने आवाज़ दी कि उनके घर पर हमला करो तो उन्होंने अंदर से आवाज़ दी कि अगर कोई भी दीवार फलाँग के अंदर आया तो मैं तुम्हारा सिर तुम्हारे जिस्म से अलग कर दूँगी और इसी तरह करूँगी जिस तरह हज़रत सफ़ीहा ने सिर उठा के बाहर फेंक दिया था। बहरहाल यह साहस देख के मुख़ालफ़ीन वहां से चले गए। 1971 ई में उनके एक बेटे जो फ़ौज में थे जंगी क़ैदी थे ,फ़ौज में थे या वैसे सरकारी मुलाज़िम थे बहरहाल जंगी क़ैदी थे। तीन साल का समय वह जंगी क़ैदी रहे। बड़े सब्र से उन्होंने वह वक़्त गुज़ारा और उनके वापस आते ही पहले उन्हें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह की ख़िदमत में पेश किया। कहते हैं हमारी माता को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ था और हमेशा घर में बातें होती थीं। यही कहा करती थीं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की घटनाएं सुनाओ। आख़री वक़्त में भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातें करती थीं कि वे आ रहे हैं। अल्लाह तआला उनके स्तर बुलंद फरमाए। क्षमा का सुलूक फरमाए और उनकी औलाद को भी और नस्लों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

ख़ुशी हुई। हर चीज़ और प्रबन्ध अच्छा था। कहीं भी कोई झगड़ा नहीं था। बड़े उत्तम तरीक़ पर हर काम हो रहा था। मेरी फ़ैमिली और बच्चे सब अहमदी है।

मुलाक़ात का यह प्रोग्राम 1 बजकर10 मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर वफ़दों के सारे मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

कांगो बराज़ा वेल के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां मुल्क कांगो बराज़ा वेल से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। कांगो बराज़ा वेल से तीन लोगों पर आधारित वफ़द आया था जिसमें एक कांगो टीवी के पत्रकार DIAKOUNDILA EDECHEVRY साहिब थे। हुज़ूर अनवर के पूछने पर पत्रकार ने बताया कि उन्होंने जलसा के प्रोग्रामों की वीडियो बनाई है और एक डाक्यूमेन्टरी तय्यार की है। जुम्अ: को शाम की ख़बरों में जलसा जर्मनी के बारे में ख़बरें प्रकाशित हुई हैं और फिर इतवार को भी प्रोग्राम प्रकाशित हुआ। इस तरह वह वापस जा कर भी प्रोग्राम प्रसारित करेंगे। पत्रकार ने निवेदन किया कि वहां लोगों की तरफ़ से जमाअत के प्रोग्रामों पर बड़ा अच्छा प्रकट किया है। सिर्फ वहां के मौलवियों की तरफ़ से विरोध है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क्या मौलवियों की विरोध की वजह से अपना चैनल बंद कर दोगे। पत्रकार ने निवेदन किया कि मैं पिछले दो साल से जमाअत के प्रोग्राम प्रकाशित कर रहा हूँ। मौलवियों की विरोध के बाद प्रोग्राम प्रकाशित कर रहा हूँ। और मैं हक़ और सच्चाई के साथ हूँ।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :ख़ुदा तआला आपको नेकी की तौफ़ीक़ दे। पत्रकार ने निवेदन किया कि यहां जर्मनी जलसा में आकर मैंने अपनी आँखों से एक बहुत बड़ी उत्तम कम्यूनिटी देखी है। मुख़ालिफ़ मौलवी कहते थे कि यह तो यहां कांगो में एक छोटी सी जमाअत है। बाहर कहीं भी नहीं है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ,अब आपने अपनी आँखों से देख लिया है। अब इन मौलवियों को छोड़ दें। ख़ुदा तआला आपको ईमानदारी से काम की तौफ़ीक़ देता रहे और सच्चाई पर क़ायम रखे।

कांगो बराज़ा वेल के वफ़द की यह मुलाक़ात 1 बज कर 45 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेम्बरों ने बारी-बारी अकेले-अकेले हुज़ूर के साथ तस्वीरें बनवाईं। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। 2 बज कर 5 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई।

10 सितंबर 2018 (दिनांक सोमवार) निकाहों के ऐलान

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 36 निकाहों के ऐलान फ़रमाए:

प्रिया तूबा अहमद पुत्री आदरणीय शमशाद अहमद क़मर साहिब (प्रिंसिपल जामिया अहमिदया जर्मनी)का निकाह प्रिय नवील अहमद शाद (छात्र जामिया जर्मनी)पुत्र आदरणीय मुहम्मद दाऊद शाद साहिब के साथ तय पाया। प्रिया आईशा सिद्दीक़ा पुत्री आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब (अहमदाबाद सांगरा पाकिस्तान) का निकाह प्रिय मुज़फ़्फ़र अहमद ज़फ़र (मुरब्बी सिलसिला रब्वह पाकिस्तान) पुत्र आदरणीय मुनव्वर अहमद साहिब के साथ तय पाया। प्रिया शमाइला सदफ़ पुत्री आदरणीय अब्दुल ख़ालिक़ तबस्सुम साहिब (बधर्म, सिंध पाकिस्तान) का निकाह प्रिय हसीब अहमद ताहिर साहिब (मुरब्बी सिलसिला रब्वह) पुत्र आदरणीय अब्दुल अज़ीज़ साहिब के साथ तय पाया। प्रिया रुबाब नाज़िम पुत्री आदरणीय नाज़िम अली साहिब (आफ़ घटियालियाँ , ज़िला स्यालकोट पाकिस्तान) का निकाह प्रिय एहतिशाम फ़र्ख़ (मुरब्बी सिलसिला गुजरांवाला , पाकिस्तान) पुत्र आदरणीय तारिक़ जावेद साहिब के साथ तय पाया। प्रिया अमतुन नूर (वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय अब्दुल क़य्यूम साहिब (आफ़ रब्वह) का निकाह प्रिय शुजाअत अहमद फ़राज़ (छात्र जामिया अहमिदया रब्वह) पुत्र आदरणीय मुबारक अहमद साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया माहा समीअ पुत्री आदरणीय अब्दुल समी साहिब (आफ़ अनटारीव , कैनेडा) का निकाह प्रिय इंतिसार अहमद (छात्र जामिया अहमिदया जर्मनी) पुत्र आदरणीय आफ़ाक़ अहमद साहिब के साथ तय पाया। प्रिया फ़र्ज़ाना इरम पुत्री आदरणीय वसीम अहमद साहिब (आफ़ रब्वह) का निकाह प्रिय मुहम्मद काशिफ़ अहमद (छात्र जामिया अहमिदया रब्वह) पुत्र आदरणीय ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब के साथ तय पाया। प्रिया आसमा वसीम अहमद (वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय वसीम

अहमद साहिब (आफ़ राटसे बुरग जर्मनी) का निकाह प्रिय राहील उम्र नवाज़ (वाक़िफ़ नौ) पुत्र आदरणीय राशिद नवाज़ साहिब (हिमबर्ग जर्मनी)के साथ तय पाया। प्रिया माइरा बाजवा(वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय तनवीर अहमद बाजवा साहिब (आफ़ राओन हाइम जर्मनी)का निकाह प्रिय तौसीफ़ अहमद (वाक़िफ़ नौ) पुत्र आदरणीय चौधरी इस्लाम अहमद साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया फ़रीदा अहमद (वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय फ़हीम राना साहिब (आफ़ टाऊनस शटाइन, जर्मनी) का निकाह प्रिय तौहीद अहमद (वाकिफा नौ) पुत्र आदरणीय मुश्ताक़ अहमद साहिब (माइनज़ ,जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया नौशीन अली (वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय लियाक़त अली साहिब (आफ़ बर्लिन, जर्मनी) का निकाह प्रिय मुसव्विर अहमद फ़ारूक़ी (वाकिफ नौ) पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद फ़ारूक़ी साहिब (बाद फ़लबील जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया रिज़वाना याक़ूब (वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय मुहम्मद याक़ूब साहिब (आफ़ आफ़न बाख जर्मनी)का निकाह प्रिय सय्यद सरफ़राज़ अहमद पुत्र आदरणीय सय्यद इफ़्तिख़ार अहमद गरदीज़ी साहिब (फ़ोर्स हाईम जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया तूबा अहमद (वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय ज़हूर अहमद साहिब (आफ़ आफ़न बाख जर्मनी) का निकाह प्रिय आतिफ़ बशीर चीमा पुत्र आदरणीय बशीर अहमद चीमा साहिब (आफ़ रोनेन बर्ग , जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया ताहिरा अहमद पुत्री आदरणीय मुनीर अहमद साहिब (आफ़ फ्रैंनकफ़ोर्ट जर्मनी) का निकाह प्रिय आमिर सईद ख़ान पुत्र आदरणीय महफ़ूज़ अहमद ख़ान साहिब (आफ़ कोलोन जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया सबाहत ज़हीर ताहिर (वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय ज़हीर अहमद ताहिर साहिब का निकाह प्रिय गुलरीज़ सलीम पुत्र आदरणीय दाऊद ग़नी साहिब (आफ़ नौए होफ , जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया नबीला अफ़ज़ल महमूद (वाक़फ़ा नौ) पुत्री आदरणीय राजा मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब (आफ़ लाटसन जर्मनी) का निकाह प्रिय हारून महमूद पुत्र आदरणीय हुसैन महमूद साहिब (आफ़ फ्रैंनकफ़ोर्ट जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया सिदरा महमूद पुत्री आदरणीय नासिर महमूद साहिब (आफ़ फ्रैंनकफ़ोर्ट जर्मनी) का निकाह प्रिय मुहम्मद यूसुफ़ (वाकिफ-ए-नौ) पुत्र आदरणीय यूनुस अहमद साहिब (आफ़ फ्रैंनकफ़ोर्ट जर्मनी)के साथ तय पाया। प्रिया अम्मारा अहमद पुत्री आदरणीय तनवीर अहमद साहिब (आफ़ कासल जर्मनी) का निकाह प्रिय नवेद अहमद (वाक़िफ़ नौ) पुत्र आदरणीय मुहम्मद ज़ाहिद अनवर जावेद साहिब आफ़ यूके के साथ तय पाया।

प्रिया अंबर प्रवीन पुत्री आदरणीय मुदस्सर अहमद ख़ान साहिब आफ़ यूके का निकाह प्रिय नदीम अहमद असलम (वाकिफ नौ) पुत्र आदरणीय कलीम अहमद असलम साहिब (शवाल बाख जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया सायरा सईद पुत्री आदरणीय सईद तबस्सुम साहिब (आफ़ रूओसलज़ हाईम , जर्मनी) का निकाह प्रिय ताहिर गुडट (वाकिफ-ए-नौ) पुत्र आदरणीय राशिद अहमद गुडट साहिब (आफ़ फ्रैंनकफ़ोर्ट जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया मुनीज़ा महमूद पुत्री आदरणीय साक़िब नवाज़ साहिब मरहूम (आफ़ होरब जर्मनी) का निकाह प्रिय आतिफ़ महमूद (वाकिफ-ए-नौ) पुत्र आदरणीय मुज़फ़्फ़र अहमद महमूद साहिब (साबिक़ मुबल्लिग़ स्पेन आफ़ रैड शटड जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया उज़्मा कंवल तूर पुत्री आदरणीय रहमत उल्लाह शमस साहिब (आफ़ वीटसलरजरमनी) का निकाह प्रिय अलीमान नईम (वाकिफ-ए-नौ) पुत्र आदरणीय मुहम्मद नईम ख़ालिद साहिब (आफ़ रोडगाओ जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया राना फ़ाखिरा अहमद पुत्री आदरणीय राना नासिर अहमद साहिब (आफ़ रोडगाओ जर्मनी) का निकाह प्रिय अहमद नवाज़ नासिर (वाकिफ-ए-नौ) पुत्र आदरणीय वसीम नासिर साहिब (आफ़ ईश बोर्न जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया फ़ारिआ कंवल मुहयद्दीन पुत्री आदरणीय ग़ुलाम मुहयुद्दीन साहिब (आफ़ हाडा मार जर्मनी) का निकाह प्रिय सफ़ीर अहमद (वाकिफ-ए-नौ) पुत्र आदरणीय नज़ीर अहमद साहिब (आफ़ ज़वीसट जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया मलीहा असलम कुल्ला पुत्री आदरणीय चौधरी मुहम्मद अरशद कुल्ला साहिब(आफ़ गोल्डन शटीडजरमनी)का निकाह प्रिय ज़हीर अहमद (वाक़िफ़ नौ)पुत्र आदरणीय नज़ीर अहमद साहिब(आफ़ बगश गलडबाख़,जर्मनी)के साथ तय पाया।

प्रिया फ़ातिमा अहमद पुत्री आदरणीय मुहम्मद ज़फ़र उल्लाह ख़ान साहिब (आफ़ नोटलन जर्मनी) का निकाह प्रिय नबील अहमद (वाकिफ-ए-नौ) पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद सलाम साहिब (हनूफ़र्र जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया ज़ौ नारा अल्लाह पुत्री आदरणीय ग़ज़नफ़र उल्लाह साहिब (आफ़ ऊओबर उरज़ल जर्मनी) का निकाह प्रिय ज़ीशान महमूद (वाकिफ-ए-नौ) पुत्र आदरणीय ख़ालिद महमूद साहिब (आफ़ लीवर कोज़न जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया नाइला अहमद पुत्री आदरणीय मसऊद अहमद गुल साहिब (आफ़ रोवट लिनगन जर्मनी) का निकाह प्रिय चौधरी ख़ुर्रम अहमद मुबश्शिर पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब (आफ़ रोवट लिनगन जर्मनी)के साथ तय पाया।

प्रिया इरम सिद्धू पुत्री आदरणीय मुहम्मद शहज़ाद सिद्धू साहिब (आफ़ रोवट लिनगन जर्मनी) का निकाह प्रिय नवेद अहमद भट्टी पुत्र आदरणीय मुनव्वर अहमद भट्टी साहिब (आफ़ फ़राइनस हाइम जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया माहिम महमूद पुत्री आदरणीय ख़ालिद महमूद साहिब (आफ़ वेज़ बादिन जर्मनी) का निकाह प्रिय समीउल्लाह पुत्र आदरणीय ग़ज़नफ़र उल्लाह साहिब (आफ़ ऊओबर उरज़ल जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया माहिम महमूद पुत्री आदरणीय ख़ालिद महमूद साहिब(आफ़ वेज़ बादिन, जर्मनी)का निकाह प्रिय समीउल्लाह पुत्र आदरणीय ग़ज़नफ़र उल्लाह साहिब(आफ़ उबरउरज़ल, जर्मनी)साहिब के साथ तय पाया। प्रिया ज़ुहा बाजवा पुत्री आदरणीय मुहम्मद सालिह बाजवा साहिब (आफ़ अगलज़ बाख जर्मनी) का निकाह प्रिय नदीम अहमद पुत्र आदरणीय वसीम अहमद साहिब (आफ़ फ्लोर्स हाईम जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया मारिया हुसैन पुत्री आदरणीय मुनव्वर हुसैन साहिब (आफ़ हिमबर्ग जर्मनी) का निकाह प्रिय ज़ोहीब अरशद पुत्र आदरणीय अरशद महमूद साहिब (आफ़ कोलोन जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया सिदरा निसार पुत्री आदरणीय निसार अहमद साहिब (आफ़ वुरस बुरग जर्मनी) का निकाह प्रिय अय्याज़ अहमद पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब (आफ़ टरीबोओर जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया रेशम बेग पुत्री आदरणीय मिर्ज़ा शमीम बेग साहिब (आफ़ हाओर ग्रीनज़ हाओज़न जर्मनी) का निकाह प्रिय तलहा अल्लाह पुत्र आदरणीय चौधरी मजीद उल्लाह साहिब (राटनगन जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया निया अहमद पुत्री आदरणीय मिर्ज़ा मसऊद अहमद साहिब (आफ़ फ्रैंनकफ़ोर्ट जर्मनी) का निकाह प्रिय तहरीम माजिद पुत्र आदरणीय माजिद मसऊद साहिब (आफ़ गरोनाओ जर्मनी) के साथ तय पाया। प्रिया अरुब ख़ान पुत्री आदरणीय अहमद सईद ख़ान साहिब (आफ़ ईशन बोर्न जर्मनी) का निकाह प्रिय शमाइल अहमद मिन्हास पुत्र आदरणीय मुहम्मद फ़ारूक़ मिन्हास साहिब (आफ़ फ़रीद बर्ग) जर्मनी के साथ तय पाया।

इन निकाहों का ऐलान करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :अल्लाह तआला ये निकाह जो मैंने आज पढ़ाए हैं उनको हर लिहाज़ से बरकतों वाला बनाए और दोनों मियां बीवी भी और ख़ानदान भी आपस में प्यार और मुहब्बत से रहने वाले हूँ और घरों का सुकून हमेशा उनका क़ायम रहे। उनकी हमेशा नेक नसलें पैदा होती रहीं।

बुलग़ारिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। प्रोग्राम के अनुसार साढ़े पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए जहां मुल्क बुलग़ारिया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। बुलग़ारिया से इस साल 56 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा सालाना में शामिल हुआ जिन में 31 ग़ैर जमाअत मेहमान थे।

एक औरत ने निवेदन किया कि मैं पहली बार जलसा में शामिल हुई हूँ और जलसा के प्रबन्ध से बहुत प्रभावित हुई हूँ। अपने लिए और सब अज़ीज़ों के लिए दुआ की दरख़ास्त करती हूँ।

एक औरत ने निवेदन किया कि मैं बहुत ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि जलसा में शामिल हुई हूँ। मैंने ऐसी कान्फ्रेंस पहले कभी नहीं देखी। मैं इन दिनों को अपनी ज़िन्दगी के बेहतरीन दिन समझती हूँ और मैं हर तरह से आपकी मदद और ख़िदमत करने के लिए तय्यार हूँ।

एक मेहमान औरत ने निवेदन किया कि मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूँ। हमारा यहां बहुत अच्छी तरह ख़्याल रखा गया। हर एक ने हमें सुविधा पहुंचाई। हम को हुज़ूर अनवर से मिलने का मौक़ा मिला। हुज़ूर अनवर के ख़िताब बहुत प्रभावकारी थे। हुज़ूर हमारे लिए दुआ करें कि हम बुराई से नजात पाएं और अपने दिलों में तब्दीली पैदा करें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ,आप भी दुआ करें हम भी आप के लिए दुआ करेंगे।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि मेरी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह दूसरी मुलाक़ात है। जलसा सालाना का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। मेरे कुछ सवाल थे जिनके जवाब मुझे हुज़ूर अनवर की तरफ़ से मिल गए हैं और मेरी तसल्ली हो गई है। मैं बुलग़ारिया में ह्यूमैनिटी फ़रस्ट का मैंबर हूँ। हम ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के चेयरमैन से सम्पर्क कर रहे हैं ताकि बुलग़ारिया में भी विभिन्न प्राजैक्ट शुरू किए जा सकें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ठीक है आप सम्पर्क करें। हम काम करते रहेंगे।

*एक दोस्त ने सवाल किया कि बुलग़ारिया में जमाअत की रजिस्ट्रेशन होने वाली है। क्या रजिस्ट्रेशन के बाद सिर्फ अहमदी ही इस में शामिल होंगे या दूसरे लोग भी शामिल हो सकते हैं?इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अगर वह अहमदी नहीं हैं और हम रजिस्ट्रेशन में यह ज़ाहिर करें कि वह अहमदी हैं तो फिर यह ग़लत काम होगा। धोखा देने वाली बात है। इसलिए अगर तो मज़हबी आर्गेनाईज़ेशन के तौर पर जमाअत रजिस्टर्ड हो रही है फिर तो शामिल नहीं हो सकते लेकिन अगर कोई चैरिटी आर्गेनाईज़ेशन के तौर पर रजिस्टर्ड हो रही है तो फिर कुछ शरीफ़ तबीयत लोगों को शामिल किया जा सकता है।

*इस वफ़द में शामिल एक औरत Kirilka साहिबा ने अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहा :मैं कई प्रोग्रामों में शामिल हुई हूँ लेकिन जमाअत अहमिदया के इस जलसा में रुहानी माहौल था। बहुत पर सुकून माहौल था जो अब रहती ज़िन्दगी तक सुकून का सामान है। लोगों के दिलों में हमारे लिए सम्मान और मुहब्बत थी। उनकी आँखों से उनके ईमान का अंदाज़ा होता था कि कैसे नेक लोग है। हुज़ूर की तक़रीरों ने मेरे दिल पर बहुत गहरा असर क्या। मैं तक़रीर के दौरान रोती रही और मुझे ऐसा लगता था कि अब मेरी नई ज़िन्दगी शुरू हो रही है। मैं कोशिश करूँगी कि बाक़ी ज़िन्दगी आपके उपदेशों की रोशनी में गुज़ारूँ। मैं आपकी बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने इस रुहानी माहौल से फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया।

*एक ईसाई डाक्टर Manikatov साहिब ने अपनी प्रतिक्रियाओं का प्रकट करते हुए कहा :मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने हमें ऐसे रुहानी माहौल में बुलाया। मेहमानों का बहुत सम्मान था। नेकी फैलाने का शौक़ हर किसी मेंकोट कोट कर भरा हुआ था। मैंने हुज़ूर की ख़िदमत में कुछ सवालात भिजवाए थे और मुझे बहुत अच्छा लगा कि हुज़ूर ने अपनी मसरुफ़ियात में से वक़्त निकाल कर मेरे सवालात के जवाबात भिजवाए।

*एक ईसाई औरत Kracimira साहिबा कहती हैं कि :मैं अपने पति और बच्चों के साथ जलसा में शामिल हुई हूँ। मैंने ऐसी उत्तम मेहमान-नवाज़ी पहले कभी नहींदेखी। वालदैन का सम्मान , बच्चों की तर्बीयत के बारे में बहुत कुछ सीखा है। उसे अब ज़िन्दगी का हिस्सा बनाऊंगी। मर्द हज़रात जिस तरह औरतों का सम्मान कर रहे थे। ये देखकर बहुत हैरानी हुई। ईसाईयत मेंऔरतों के लिए इतना इज़्ज़त और सम्मान मैंने नहींदेखा। शुक्रिया के साथ साथ में आपके लिए दुआ-गो हूँ।

*एक और ईसाई औरत Walentina साहिबा कहती हैं कि मेंपहली बार जलसा मेंशरीक हुई हूँ। इतने ज़्यादा लोगों को इकट्ठे देखकर और एक दूसरे का सम्मान करते देखकर बहुत ख़ुशी हुई। खासतौर पर आपने जो जबर के ख़िलाफ़ शिक्षा का ज़िक्र किया है उसने मुझे बहुत प्रभावित किया और इस्लाम के बारे में जो ग़लत-फ़हमियाँ फैलाई जा रही हैं उनकी हक़ीक़त वाज़िह हो गई है। और अब इस्लाम के बारे में मेरा दिल सन्तुष्ट हो गया है।

*एक दोस्त मुहम्मद यूसुफ़ साहिब भी इस वफ़द में शामिल थे। उन्होंने कहा :मैं पहली बार इस जलसा में शामिल हुआ हूँ। जो बातें जमाअत के ख़िलाफ़ सुनी थीं जलसा के माहौल को देखकर अब मेरा दिल हर लिहाज़ से साफ़ हो गया है। सब तरफ़ भलाई और क़ुरआन तथा हदीस की शिक्षा थी। आपके माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं ने मुझे बहुत प्रभावित क्या। हर तरफ़ सुकून ही सुकून था। खासतौर पर हुज़ूर के आने पर बहुत सुकून मिलता था। जलसा के दौरान ही मैंने फ़ैसला किया कि अब में भी अहमदियत में दाख़िल होता हूँ। मेरी काफ़ी ज़ाती मुश्किलें थीं लेकिन जब मैं जलसा में शामिल हुआ तो मेरी मुश्किलें अपने आप दूर होना शुरू हो गईं। अब मैं जमाअत के पैग़ाम को आगे फैलाऊँगा।

*एक औरत Annaसाहिबा ने कहा : मैं पहली बार आई हूँ। मुझे सब कुछ बहुत अच्छा लगा। ख़िदमत का नि:स्सवार्थ जज़्बा देखकर बहुत अच्छा लगा। इसी तरह बच्चों का पानी पिलाना बहुत अच्छा था। इल्म में बहुत इज़ाफ़ा हुआ।

*एक और ईसाई औरत Lilyana साहिबा कहती हैं :हुज़ूर की तक़रीरों का बहुत गहरा असर हुआ है। हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि आपके पास आए है। एक दूसरे से हमदर्दी , हुकूमतों को समझाना और आपके शब्द ऐसे थे कि अगर दुनिया उन पर अनुकरण करे तो ये दुनिया बहुत अच्छी हो जाए और एक अमन वाले दुनिया बन जाए। हुज़ूर हमारी फ़ैमलीज़ के लिए दुआ करें।

*बुलग़ारिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ ये मुलाक़ात छ: बजे तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तसवीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

बोस्निया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद बोस्निया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। बोस्निया से इस साल 59 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा जर्मनी में शामिल हुआ।

* एक मेहमान ने निवेदन किया कि में पिछले साल भी जलसा सालाना पर आया था। इस साल भी शामिल हुआ हूँ। जलसा में दुआओं का मौक़ा मिला है। पिछले साल मैंने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत मेंदुआ की दरख़ास्त की थी कि मेरे पास कोई काम नहीं है। नौकरी नहीं है। जब मैं जलसा से वापस गया तो मुझे जाते ही काम मिल गया। ये सब हुज़ूर अनवर की दुआ की बरकत से हुआ।

*एक दोस्त ने निवेदन किया कि मेरे दाएं हाथ पर ज़ख़म था। मैंने हुज़ूर अनवर अदा अल्लाह तआला से मुसाफ़ा का सौभाग्य पाया और जब वापस घर पहुंचा तो मुझे ज़ख़म से शिफ़ा हो चुकी थी। ये सब कुछ मुसाफ़ा की बरकत से हुआ।

*एक मेहमान ने निवेदन किया कि ख़ुदा तआला मुझे और मेरे ख़ानदान के लोगोंको सेहत दे और परेशानी से बचाए और मुझे दुबारा तौफ़ीक़ दे कि में फिर आकर हुज़ूर अनवर से मिलों। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

*एक उम्र रसीदा शख़्स ने निवेदन किया कि मैं ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करता हूँकि उसने मुझे इस उम्र मेंख़लीफ़ा वक़्त की ज़यारत की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है।

*एक औरत ने अपनी परेशानीयों से नजात के लिए दुआ की दरख़ास्त की। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

*एक औरत ने निवेदन किया कि वो सरकारी यतीमख़ाना की डायरेक्टर है। जमाअत ने उनके साथ काफ़ी प्राजैक्ट किए है। महोदया ने दुआ की दरख़ास्त की कि ख़ुदा तआलालोगों को अक़ल देता कि सब मिलकर ख़िदमत करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उस के लिए ज़रूरी है कि इन्सान बेनफ़्स हो कर काम करे।

*एक मेहमान ने निवेदन किया कि मीडीया में इस्लाम का ग़ैर इस्लामी चेहरा दिखाया जाता है। और इस्लाम को बुरे रंग मेंप्रस्तुत किया जाता है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपका सोसाइटी मेंएक स्टेटस है तो आप मिलकर काम करें और इस प्रापेगंडा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाईं। *एक मेहमान ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत मेंसलाम निवेदन किया और बताया कि मेंदो साल से जमाअत के साथ प्राजैक्ट कर रहा हूँ और जमाअत उनके साथ मिलकर उनकी मदद करती है।पिछले साल भी जलसा में शामिल हुआ था। इस साल भी शामिल होने का मौक़ा मिला है।

*बोस्निया से एक दोस्त अर्मन साहिब जलसा पर तशरीफ़ लाए हुए थे। ये बोस्निया के शहर ज़ीनका के मेयर के नुमाइंदा के तौर पर शामिल हुए थे। उन्होंने अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहा कि जलसा के सारे प्रबन्ध बहुत ही उच्च थे और हैरत होती थी कि ये लोग किस तरह से काम कर रहे है। जलसा गाह में दाख़िल होने से एक रूहानियत की कैफ़ीयत तारी हो जाती है और हर तरफ़ से अमन और मुहब्बत के नज़ारे नज़र आते हैं। लेकिन इन सब बातों से ज़्यादा मुझे जिस बात ने प्रभावित किया वह इमाम जमाअत अहमिदया के साथ ज़ाती मुलाक़ात का अनुभव था। वह कुछ लमहे मेरी ज़िन्दगी के सबसे हसीन लमहे हैं। इमाम जमाअत के साथ गुफ़्तगु का अनुभव और इस क़दर क़रीब से आपको देखना मेरे लिए एक रुहानी अनुभव था। मैं इमाम जमाअत को क़रीब से देख रहा था कि आपकी शख़्सियत में किस क़दर क़ुव्वत जाज़िबीयत है। और आपके चेहरा पर किस क़दर सुकून है। में बिना अतिश्योक्ति के कहता हूँ कि आपकी ज़ात साक्षात अमन तथा सलामती है। और मैं मुलाक़ात के बाद भी इन हसीन यादों से लज़्ज़त उठा रहा हूँ। और वापसी के सफ़र में भी और घर वापसी के बाद भी ख़लीफ़ा की हसीन याद मेरे अंदर रूहानियत के एहसास को उजागर करती रहेगी। महोदय ने अपने शहर की इंतिज़ामीया की तरफ़ से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में एज़ाज़ी शील्ड तोहफ़ा के रूप में प्रस्तुत की और बताया कि इस शील्ड में 1198 ई का एक डाक्यूमैंट है। जिसके अनुसार उस वक़्त के बौस्निया के बादशाह ने क्रोशिया के लोगों को अधिकार दिया था कि वो

बौस्निया आएं और यहां आकर काम करें। तो यह वह पहला ऐसा पुराना डाकूमैंट है जिस में बौस्निया का ज़िक्र तारीख़ी तौर पर मिलता है।

*बौस्निया से एक ग़ैर अहमदी मस्जिद के इमाम हारिस साहिब भी जलसा में शरीक हुए। जलसा से पहले एक तब्लीग़ी नशिस्त में उन्होंने कहा कि मैं ख़ुद जमाअत के बारे में तहक़ीक़ करना चाहता हूँ ताकि ज़ाती इलम की बिना पर जमाअत के बारे में सही राय क़ायम कर सकों। इसी बिना पर उन्होंने जलसा में शामिल होना की दावत क़बूल की। जलसा गाह में कुछ वक़्त गुज़ारने के बाद महोदय ने कहा कि :अहमिदयों के बीच कुछ वक़्त गुज़ारने के बाद में इस नतीजा पर पहुंचा हूँ कि तुम ही वे लोग हो जो कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा की तब्लीग़ सही अर्थों में कर रहे हो। जलसा की सारी कार्रवाई को ध्यान और ग़ौर से देखते रहे। जलसा के बाद उनको वफ़द के बाक़ी मेम्बरों के साथ जामिया अहमिदया जर्मनी भी दिखाया गया।

जामिया की सैर के बाद महोदय ने कहा :अफ़सोस कि मुसलमान दुनिया धर्म और दुनिया की शिक्षा में बहुत पीछे है। मगर एक तरफ़ जहां जलसा के दौरान मैंने देखा कि इमाम जमाअत अहमिदया दुनियावी इल्मी मैदान में नुमायां कामयाबी हासिल करने वाले छात्रों और छात्राओं को सनदों से नवाज़ रहे थे। और दोस्त जमाअत में दुनियावी इलम में आगे बढ़ने की रूह को तरक्की दे रहे थे। तो दूसरी तरफ़ जामिया की सैर के बाद इस बात का भी ज्ञान हो गया कि जमाअत अहमिदया ख़िलाफ़त की अनुकरण में किस तरह धार्मिक इल्म की इशाअत के लिए उत्तम तरीक़ पर कोशिश कर रही है और किस क़दर शानदार सन्तुलन के साथ इस मैदान में आगे बढ़ रही है और मुसलमानों की खोई हुई साख को वापस लाने की कोशिश में लगी हुई है।

महोदय ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के बाद कहा कि: इमाम जमाअत अहमिदया से सीधी मुलाक़ात और गुफ़्तगु की तौफ़ीक़ मिली , मेरे लिए ये बात सौभाग्य की बात है। मुलाक़ात के दौरान महोदय ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि मैं बानी जमाअत अहमिदया की तसनीफ़ बराहीन अहमिदया और तज़किरा का अध्ययन करना चाहता हूँ, इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने महोदय की राहनुमाई फ़रमाते हुए कहा कि आप पहले इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी और Invitation to Ahmadiyyat का अध्ययन करें तो सारी बातें अच्छी तरह समझने में आसानी होगी। बेशक बराहीन और तज़किरा का भी अध्ययन करें।

*बोस्निया के वफ़द में एक 75 वर्षीय बुज़ुर्ग उसमान साहिब भी शामिल थे। यह एक से अधिक बार हज बैयतुल्लाह की भी सआदत हासिल कर चुके हैं। महोदय ने कहा कि जब मुझे इस जलसा में शामिल होने की दावत मिली और कहा गया कि इस जलसा में ख़लीफ़ा ने शामिल होना होगा तो इस जलसा में शामिल होना के लिए शब्द ख़लीफ़ा ने मेरे अंदर एक हैरत-अंगेज़ कशिश पैदा कर दी। इस उम्र में इस क़दर लंबा सफ़र धारण करना मेरे लिए बहुत मुश्किल था मगर मेरी यह नीयत थी कि ख़ुदा के ख़लीफ़ा की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उस नूरानी चेहरा की ज़यारत का सौभाग्य हासिल करूँगा और इस ख़ुदा के बर्गुज़ीदा से यह निवेदन करूँगा कि ज़िन्दगी का कोई एतबार नहीं इसलिए दुआ करें कि अल्लाह तआला मेरे गुनाहों को माफ़ करे और बाक़ी की ज़िन्दगी उसकी रज़ा के साथ गुज़रे ,नीज़ मुझे और मेरे घर वालों को अल्लाह तआला दुनिया की बलाओं से महफ़ूज़ रखे। अगर अल्लाह तआला सेहत प्रदान फ़रमाए तो अगले साल भी हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो जाऊँगा और कोशिश करूँगा कि इस पैग़ाम को अपने इर्दगिर्द के माहौल में फीलाओं।

*बोसनीयन वफ़द में एक औरत मुअम्मिरा साहिबा भी शामिल थीं। यह कहती हैं: मैं पहली बार जलसा में हुज़ूर से मुलाक़ात का सौभाग्य हासिल कर रही हूँ। जलसा के दिन कितनी तेज़ी से गुज़र गए हमें पता ही नहीं लगा। काश ये दिन और भी लंबे हो जाते। मेरी इच्छा है कि हर साल जलसा में शिरकत करूँ। हुज़ूर अनवर के चेहरा में एक नूर है जो हमने देखा है, काश हमारे मुल्क के लोग भी इस नूर को देखें।

*बोस्निया के वफ़द में मोनटीनीगरो से सम्बन्ध रखने वाले फ़ारूक़ साहिब भी शामिल थे। यह कहते हैं: मैं एक कमज़ोर रोशनी रखने वाला शख़्स हूँ, मगर इस जलसा में शामिल हो कर मैंने सब कुछ दिल की आँखों से देखा है और इस जलसा से रूह को तृप्त कर के वापस जा रहा हूँ। मैं जिस मुल्क या इलाक़ा से सम्बन्ध रखता हूँ वहां धर्म और मज़हब से लोग बहुत दूर हैं और रूहानियत क्या चीज़ है इस की हमें कोई ख़बर नहीं है। मगर जलसा के दौरान मैंने महसूस किया है कि ख़ुदा मौजूद है और इस की बरकतें यहां अमन और सलामती और दिल का सन्तोष की शक्ल में नाज़िल हो रही हैं जिससे मैंने भी हिस्सा लिया है। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के बाद महोदय ने कहा: जैसा कि मैंने पहले निवेदन किया कि मैं एक कमज़ोर रोशनी वाला आदमी हूँ , मुलाक़ात के दिन ख़लीफ़ा को दूर से नज़र की कमज़ोरी की वजह से सही तरह देख नहीं सकता था, लेकिन जब तस्वीर खींचने की बारी आई और आप से हाथ मिलाने का सौभाग्य हासिल कर रहा था तो उस वक़्त मेरे दिल ने यह महसूस किया कि यह आदमी एक साक्षात बरकत और नेअमत है, और आपने मुझे अंग्रेज़ी में Thank You फ़रमाया। आपके यह शब्द अभी तक मेरे कानों में गूंज रहे हैं और इस गूंज से में एक रुहानी आन्नद हासिल कर रहा हूँ। अगर अल्लाह तआला सेहत दे तो हर साल इस जलसा में शामिल होने की कोशिश करूँगा और इस बरकत को लौटते हुए घर वापस जाऊँगा।

*बोस्निया के वफ़द में एक नई बैअत करने वाले दोस्त Elvedin साहिब भी शामिल थे। जब महोदय को बताया गया कि जर्मनी के जलसा में हुज़ूर अनवर शामिल होते हैं तो महोदय ने भी जलसा में शामिल होना की इच्छा का प्रकट की। मगर जहां ये काम कर रहे थे वहां से उनको छुट्टी मिलनी बहुत मुश्किल थी। जिस आदमी के पास यह काम कर रहे थे इस आदमी का व्यवहार भी बहुत सख़्त था। उन्होंने इरादा किया कि अगर काम भी छोड़ना पड़े तब भी जलसा में शामिल हो कर हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य हासिल करेंगे। इस बारे में दुआ भी करते रहे। ख़ुदा का करना ऐसा हुआ कि जिसके पास यह काम कर रहे थे उसने ख़ुद उन को यह पेशकश की कि जितने दिनों की छुट्टी की ज़रूरत है ले लो और छुट्टी से वापस आकर काम शुरू कर देना। इस तरह महोदय को जलसा में शामिल होने और हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य हासिल करने का मौक़ा मिल गया।

*एक दोस्त ने सवाल किया कि क्या वजह है कि मुसलमानों में इस क़दर मतभेद हैं। मुसलमान जगत एक दूसरे के ख़िलाफ़ है और एक दूसरे के साथ ही जंग कर रहे हैं। यह सिर्फ़ अरब देशों की बात नहीं बल्कि सारी दुनिया में ही यह अवस्था है। इस की क्या वजह है? हुज़ूर अनवर इस मस्ला को किस तरह देखते हैं और इस के बारे में क्या फ़रमाते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जमाअत अहमिदया के लिए इस मस्ला को देखना तो बहुत सादा और simple है। हम तो ये देखते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी और यह हदीस थी कि एक ज़माना आँ हज़रत की नबुव्वत का होगा , इसके बाद ख़िलाफ़त राशिदा का ज़माना होगा, उस के बाद मुलूकियत फैलेगी और लम्बा अरसा रहेगी और इस के बाद मसीह मौऊद और महदी माहूद का ज़हूर होगा और इस के बाद इस्लाम का revival होगा और एक जमाअत क़ायम होगी और यह भी फ़रमाया था कि इस्लाम के अंदर बहुत सारे फ़िर्क़े हो जाऐंगे और अब हम देखते हैं कि यद्यपि कहने को तो सिर्फ दो बड़े फ़िर्क़े हैं सुन्नी और शीया लेकिन उनके अंदर फिर इतनी sub-division हुई है कि हर गिरोह अपने-अपने इमाम को ही हक़ पर समझता है और इस वजह से उल्मा में आपस में मतभेद हैं। इन मतभेदों की वजह से उनकी मस्जिदों में उनके पीछे मुक़तदी जो नमाज़ें पढ़ने के लिए आते हैं उनके ज़िहनों पर इन इमामों के विचारों छा जाते हैं और फिर हर कोई समझता है कि हम ठीक हैं और बाक़ी सब ग़लत हैं और फिर वे ये भूल जाते हैं कि इस्लाम की बुनियादी शिक्षा क्या है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क़ुरआन करीम ने तो फ़रमाया है कि رُحَمَآءُ بَيۡنَهُمۡ अर्थात आपस में नेक सुलूक हो और प्यार और मुहब्बत के साथ रहने वाले हूँ। तो इस की एक वजह तो यही है कि इस किस्म के तथाकथित उल्मा मतभेदों की बातों को बढ़ाते चले गए हैं। फिर जो मुसलमान लीडर्ज़ हैं उनके व्यक्तिगत लाभ होते हैं। बजाय उस के कि वे इस बात को अल्लाह तआला का फ़ज़ल समझें कि उनकी पार्टी हुकूमत में आई और वे अवाम की सेवा

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 2 May 2019 Issue No. 18

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

करें , उनके अपने लाभ होते हैं। जो भी आता है वो हुकूमत पर क़ब्ज़ा जमाना चाहता है, हुकूमत को छोड़ना नहीं चाहता और इस के लिए अगर उनको लोगों पर ज़ुल्म भी करना पड़े तो करते हैं। इसलिए चाहे दुनियादार लीडर हैं, मुल्क के मार्ग दर्शन करने वाले हैं या सियासी पार्टीयों के लीडर हैं या धार्मिक लीडर हैं सब ने अवाम का ऐसा मिज़ाज बना दिया है कि वे समझते हैं कि हम ही सही हैं और इस के लिए हमें जो भी करना पड़े करेंगे, चाहे ज़ुल्म ही करना पड़े और इसी का नतीजा है कि मुल्कों के अंदर भी पार्टियों की छेड़छाड़ की वजह से या फ़िर्क़ों में नफरतों की वजह से ज़ुल्म हो रहे हैं और एक मुल्क दूसरे मुल्क से भी लड़ाई कर रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसलिए हम तो इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि आँ हज़रत की पेशगोई के अनुसार जिस आदमी ने आना था वह आ गया और उसने ये ऐलान किया कि मैं दो प्रमुख कामों के लिए आया हूँ। एक तो बंदे को ख़ुदा की पहचान कराऊँ और उसे क़रीब लाऊँ और इन्सानों को एक दूसरे के हक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाऊँ। इसी काम के लिए जमाअत अहमिदया ने सारी दुनिया में अपने मिश्न भी खोले हुए हैं और तब्लीग़ भी करती है और इस्लाम का पैग़ाम भी पहुंचा रही है। इसलिए आप दुनिया के किसी भी मुल्क में चले जाएं , अफ्रीक़ा जहां अल्लाह के फ़ज़ल से अहमदियत तेज़ी के साथ फैल रही है, वहां के दौर के इलाक़ों में चले जाएं, फिर इंडोनेशिया है, मलेशिया है , यूरोप के देश हैं या एशिया के दूसरे देश हैं आप हर जगह यही देखेंगे कि अहमदियत का मिज़ाज एक ही है कि अमन और मुहब्बत और भाईचारे की फ़िज़ा को क़ायम करना है। इसी वजह से कुछ जगहों पर हम पर ज़ुल्म भी होते हैं लेकिन हमने कभी retaliate नहीं किया, कभी जवाब नहीं दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: असल चीज़ यही है कि अल्लाह तआला ने हमारे सामने जो हल प्रस्तुत फ़रमाया है, जिसकी आँ हज़रत ने पेशगोई भी फ़रमाई थी और हमारे ईमान के अनुसार क़ुरआन करीम में सूरत अल्जुम्अ: में भी इस का ज़िक्र है , वही एक हल है जो मुसलमानों में मौजूद मतभेद को ख़त्म कर सकता है। बाक़ी कम से कम हर इन्सान चाहे किसी भी फ़िर्क़ा का हो वह अक़्ल रखता है , उस को चाहिए कि हर बात को सुनने के बाद या इस पर अनुकरण करने से पहले सोचना चाहिए कि मैं जो भी कर रहा हूँ सही भी है या नहीं? ज़रूरी नहीं कि बे-अक़्लों की तरह हर बात के पीछे चल पढ़ें। अगर अक़्ल वाले इन्सान चाहे वे दुनिया के किसी भी फ़िर्क़ा से सम्बन्ध रखते हों वे इस बात को realise कर लें तो दुनिया में अमन क़ायम हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर ये लोग जायज़ा लें तो उनको पता लग जाएगा कि इराक़ में भी और सीरिया में भी यद्यपि कि पश्चिमी ताक़तों ने फ़साद को हवा देने में किरदार अदा किया है लेकिन फ़साद की बुनियाद वही है शीया और सुन्नी का मतभेद। तुर्की में भी क़ौमों की वजह से मस्ला पैदा हुआ है कि वे तुर्क हैं और कुर्द हैं। तो हर जगह इन्सान इसलिए लड़ रहा है कि उनके अपने interest ज़्यादा हो गए हैं और वे अल्लाह तआला की बात को सुनना नहीं चाहते। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है अल्लाह तआला ने तो मुसलमानों की निशानी बताई थी رُحَمَآءُ بَيۡنَهُمۡ लड़ाई करने की निशानी तो अल्लाह तआला ने काफ़िरों की बताई है कि قُلُوۡبُهُمۡ شَتّٰى लेकिन मुसलमानों का आजकल ये हाल है कि उनके दिल फटे हुए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अब आप ख़ुद फ़ैसला कर लें कि ऐसे मुसलमान अल्लाह तआला की बात मान रहे हैं या नहीं मान रहे ? अगर आप सोचें तो आपको उस का हल ख़ुद ही मिल जाएगा।

बोस्निया के वफ़द की हुज़ूर अनवर के साथ ये मुलाक़ात 6 बजकर 40 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

गाम्बिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद मुल्क गाम्बिया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। गाम्बिया से इस साल 40 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा जर्मनी में शामिल हुआ।

सबसे पहले वफ़द के मेम्बरों ने बारी-बारी अपना परिचय करवाया। हुज़ूर अनवर के पूछने पर वफ़द के मैंम्बरों ने बताया कि जलसा जर्मनी बहुत अच्छा आर्गेनाईज़ था। हर प्रबन्ध बहुत उम्दा था और उत्तम था।

अफ़्सर साहिब जलसा सालाना गाम्बिया भी वफ़द में शामिल थे। कहने लगे कि जलसा के प्रबन्ध के बारे में से मैंने यहां से बहुत कुछ सीखा है। इस से पहले मैं दो विभिन्न सालों में यू.के के जलसों में शामिल हुआ हूँ। वफ़द के मेम्बरों ने निवेदन किया कि हम कोशिश कर रहे हैं के गाम्बिया पहला अहमदी मुल्क हो।

गाम्बिया से जामियतुल मुबश्शरीन घाना के लिए जाते हैं। नायब अमीर साहिब गाम्बिया ने निवेदन किया कि हमारे छात्रों को भी शाहिद करना चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इंटरनेशनल जामिया घाना में जाएं। जामियतुल मुबश्शरीन के तीन साल बाद जो छात्र ज़हीन होंगे और पढ़ाई में अच्छे होंगे वे इंटरनेशनल जामिया में जाऐंगे।

गेम्बिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से यह मुलाक़ात 7 बजे तक जारी रही। इस के बाद वफ़द के मेम्बरों ने तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

हज़रत मुहम्मद रमज़ान साहिब रज़ि अल्लाह

दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वाह 9 अक्तूबर 2000 ई में हज़रत मुहम्मद रमज़ान साहिब रज़ि अल्लाह का ज़िक्रे ख़ैर करते हुए आदरणीय वहीद अहमद रफ़ीक़ साहिब लिखते हैं कि

आप ज़िला करनाल के गांव महमूदपुर में पैदा हुए। पिता का नाम मुहम्मद बूटा था जिनकी एक सौ एकड़ ज़मीन थी। क़रीब कोई स्कूल नहीं था इस लिए आपने बचपन ही से अपने पिता के साथ खेतीबाड़ी का काम शुरू कर दिया। आपके पिता जमाअत अहमदिया की स्थापना से पहले ही वफ़ात पा गए। जब आपने यह सुना कि कादियान में किसी ने मसीह मौऊद होने का दावा किया है तो आप पैदल कादियान रवाना हो गए और एक हफ़्ता के सफ़र के बाद कादियान पहुंच कर बैअत कर ली। यह फरवरी 1905 ई का ज़िक्र है। आप रज़ि के बाद गांव के तीन अन्य बुज़ुर्गों ने भी बैअत कर ली जिनकी तब्लीग़ से फिर अधिकतर अहमदी हो गई।

आप ने क़रीबन सत्तर बरस उम्र पाई। अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में आप रज़ि को निमोनिया हो गया था। इस दौरान आप ने एक कशफ़ में दो फ़रिश्ते देखे जो सफ़ेद लिबास पहने हुए थे और उन की बड़ी बड़ी आँखें थीं। उन के आने से कमरा रोशन हो गया। पूछने पर उन्होंने अपने नाम बताए और कहा कि मौलवी-साहिब! आईए आपका नाम रजिस्टर से कट चुका है। आप ने पूछा आमाल-नामा कैसा है? तो उन्होंने एक गहरे सियाह-रंग का थान खोला जिस पर कई धब्बे थे। इस पर आप रज़ि घबरा गए तो उन्होंने तसल्ली देते हुए कहा कि मौलवी-साहब! घबराएँ नहीं। और फिर एक सफ़ेद चमकदार थान खोला जो इस काले थान से दुगना था। फिर फ़रमाया कि वह आप के अहमदियत क़बूल करने से पहले का था जबकि यह सफ़ेद थान अहमदियत क़बूल करने के बाद का है। आप ने फ़रिश्तों से बैठने की दरख़ास्त की लेकिन वे अस्सलामो अलैकुम कह कर चले गए। इस कशफ़ के बाद आप को सेहत हो गई। फिर एक रोज़ आप रज़ि ने अपनी पत्नी से सुब्ह-सवेरे कहा कि आपको नहला कर कपड़े बदल दें। फिर आप घर से बाहर चारपाई पर बैठ गए और गांव वालों से कहा कि अगर मुझ से कोई ग़लती हो गई हो तो माफ़ कर दें। फिर आप अंदर आए और कुछ ही देर बाद आप की वफ़ात हो गई। महमूदपुर में ही दफन हुए।

अल्लाह तआला आप पर रहम फरमाए और आप के स्तर ऊंचे करे। आमीन

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad